भारतीय मजदूर संघ

श्री दत्तोपन्त ठेंगड़ी षष्ठी पूर्ति सत्कार समारोह-स्मृति स्मारिका अंक

सत्कार समारोह-स्मृति स्मारिका

✦

प्रबन्ध सम्पादक :

मदन लाल सैनी

✦

सम्पादक मण्डल :

कृष्णचन्द्र चतुर्वेदी **ऋषिराज शर्मा**

ऋषभचन्द जैन **प्रहलाददास बंसल**

✦

कार्यालय :

सी-7, एम. एल. ए. क्वार्टर्स, जयपुर

दूरभाष : 7 2 1 6 1

✦

मूल्य — पाँच रुपये

✦

प्रकाशक :

भारतीय मजदूर संघ,

राजस्थान प्रदेश

मुद्रक :

राजमल राणा

द्वारा

जय लक्ष्मी प्रिन्टर्स, जयपुर-3

सम्पादकीय

अज्ञानी व्यक्ति में आत्मविश्वास अनिवार्यतः नहीं होता। हठ हो सकता है।

बुद्धिमान व्यक्ति में कर्तृव्य के क्षेत्र में पहुंचकर आत्मविश्वास अनुत्तीर्ण हो जाता है।

दैनिक जीवन में बुद्धि और कर्तृव्य का समन्वय करने से आत्म-विश्वास बढ़ता जाता है लेकिन उद्देश्य की विराटता अथवा लघुता के अनुरूप जनता में सम्मान या असम्मान का व्यक्ति पात्र बन सकता है।

माननीय दत्तोपन्तजी ठेंगड़ी में बुद्धिमत्ता, कर्तृव्य तथा आत्मीयता के समन्वित दैनिक अभ्यास के कारण आत्मविश्वास पूर्ण नेतृत्व की क्षमता के साथ ही इतर संगठनों में उनके प्रति जो हार्दिक सम्मान दृष्टिगत होता है वह किसी चमत्कार के कारण नहीं उनके विशिष्ट निरन्तर अभ्यास का परिणाम है जिसे निष्ठा-जनित भी कह सकते हैं।

सामाजिक परम्परा के अनुसार ऐसे व्यक्तित्व का षष्टि–पूर्ति सत्कार स्वयं में औचित्यपूर्ण महत्व रखता है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जन्मदाता पूजनीय डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने देशवासियों को इस प्रकार के अभ्यास की ओर उन्मुख होने की प्रेरणा दी कि भारत का जन-जन फिर विश्व में गौरव प्राप्ति के योग्य बने।

हमारे सबके सौभाग्य से वही प्रेरणा मा० ठेंगड़ीजी के व्यक्तित्व के माध्यम से भी हमें मिल रही है।

हमारी इच्छा शक्ति उनके चिर-स्वास्थ्य के लिये समर्थ हो, ऐसी प्रार्थना हम सर्वशक्तिमान् प्रभु से करते हैं।

–मदनलाल सैनी

भारतीय मजदूरों के प्रयासों की दिशा

१– देशप्रेमियों में मान्यता ।
२– औद्योगिक ईकाई में श्रमिक अंशधारी माना जाय ।
३– आवश्यकता पर आधारित न्यूनतम वेतन ।
४– काम, विश्राम तथा हड़ताल का अधिकार ।
५– स्वचालितिकरण की समाप्ति ।
६– 'विश्वकर्मा दिवस' को राष्ट्रीय श्रम दिवस की मान्यता ।
७– पदों का मूल्यांकन ।
८– मूल्य सूचकांकन की ठीक पद्धति ।
९– मूल्य-वृद्धि का समतोलीकरण ।
१०– भारतीय दृष्टि से सामाजिक आर्थिक संरचना ।
११– आर्थिक अधिकारों का विकेन्द्रीकरण ।
१२– ठेकेदारी प्रथा की समाप्ति, स्थायित्व का अधिकार, अस्थायी प्रथा की समाप्ति ।
१३– स्वायत्तशासी औद्योगिक निगम ।
१४– सभी आर्थिक-पक्षों की राष्ट्रीय सेवा नीति, आय, मूल्य तथा उत्पादन पर गोल-मेज वार्ताओं की पद्धति ।
१५– मूल्य स्थायित्व तथा पूर्ण रोजगार स्थिति के लिये स्वायत्तशासी आर्थिक प्राधिकरण
१६– समान समस्याओं के लिये समान श्रम संहिता ।
१७– औद्योगिक सम्बन्धों के लिये आयोग ।
१८– न्यूनतम तथा अधिकतम आय में १ : १० का अनुपात ।
१९– सभी व्यक्तियों के लिये समाकलित सामाजिक सुरक्षा योजना ।
२०– एकाधिकार पद्धति का निर्मूलन ।
२१– लघु एवं वृहत् योजनाएं ।
२२– विकेन्द्रित उत्पादन के लिये क्षेत्रीय तकनीक का विकास ।
२३– उपभोक्ता वस्तुओं में आत्मनिर्भरता ।
२४– श्रम-प्रधान उपक्रम ।
२५– योजना का पौर्वात्यिकरण ।
२६– संसद में व्यावसायिक प्रतिनिधित्व ।
२७– सस्ता तथा शीघ्र न्याय ।
२८– श्रमिक प्रतिनिधि समिति की स्वीकृति के बिना सेवा-समाप्ति अमान्य हो ।
२९– कर्मचारियों के बच्चों को रोजगार ।
३०– कृषि श्रम-नियमों को लागू करना ।
३१– श्रमिकों का राष्ट्रीयकरण, राष्ट्र का औद्योगीकरण, उद्योगों का श्रमिकीकरण ।

समारोह पर मा. ठेंगड़ीजी

दर्शक गण : अभिनन्दन समारोह जयपुर

दर्शक : अभिनन्दन समारोह जोधपुर

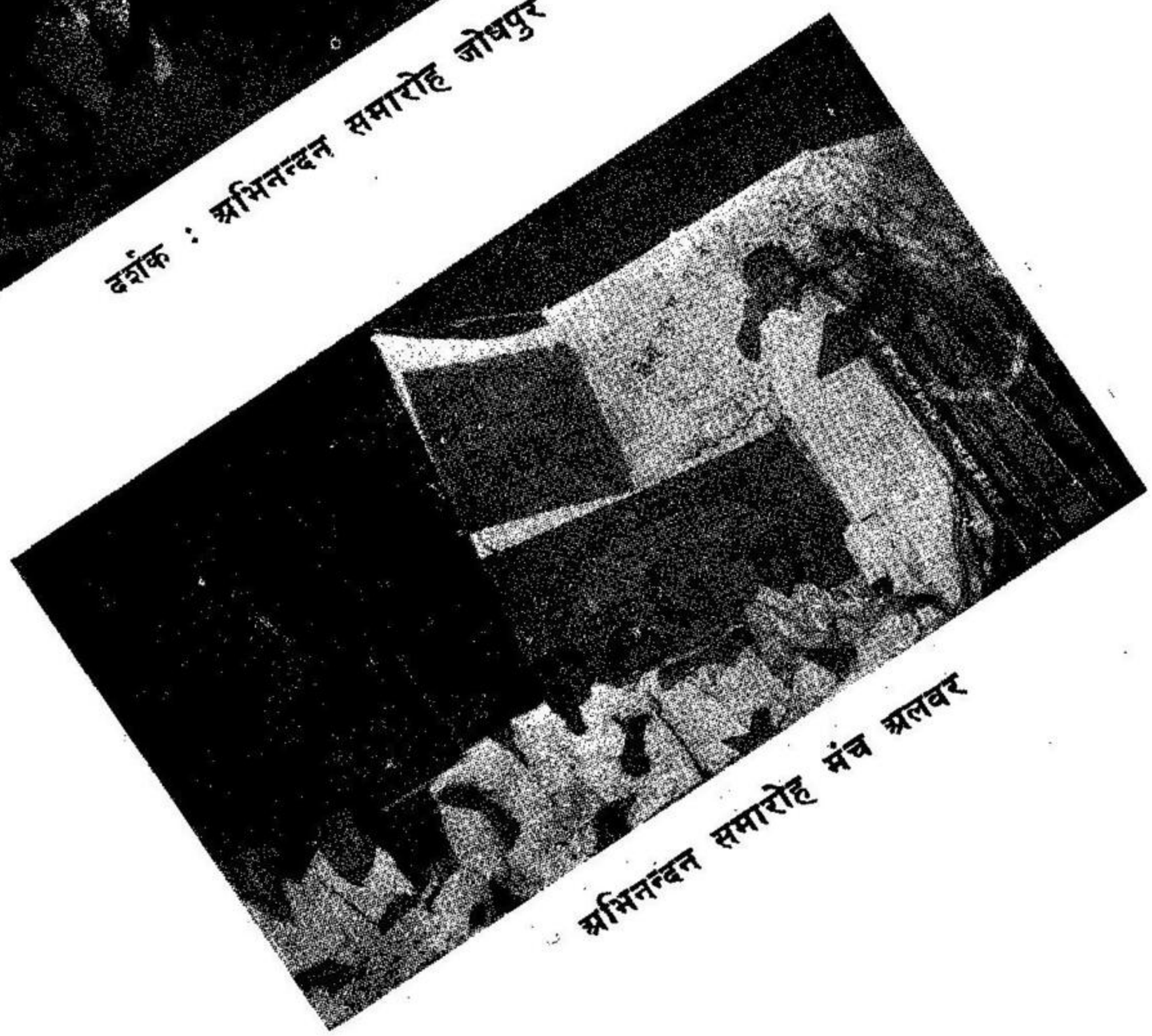

अभिनन्दन समारोह मंच अलवर

दत्तोपन्त 'आर्वीकर'

वर्धा जिले के 'आर्वी' गांव में श्री दिनकर जी देशपांडे के घर हम बैठे थे। मा० दत्तोपन्त जी के बचपन के साथी इकट्ठे हुए थे। मा० ठेंगड़ी जो के बाल्यकाल का परिचय प्राप्त करने हेतु वहां गया था। मा० दत्तोपन्त के जन्मस्थान आर्वी में ही उनकी माध्यमिक शिक्षा हुई थी। विशेषतः वहां के पुस्तकालयाध्यक्ष ने उनको बहुश्रुत बताया।

आर्वी एक छोटा सा तेहसील गांव है। मा० बापू जी ठेंगड़ी—माननीय दत्तोपन्तजी के पिताजी—वहां के यश-प्राप्त वकील थे। वकालत खूब अच्छी चल रही थी। श्री बापू जी भगवान दत्तात्रेय के भक्त थे। अत्यन्त उग्र प्रकृति के थे और माननीय दत्तोपन्त जी की माता जी जिन्हें सभी बाई कहते थे मूर्तिमन्त वात्सल्य। घर में सभी पिताजी से डर कर रहते थे वहीं माता जी का सहाराभी बहुत बड़ा था।

गांव के सभी घरों में मा० दत्तोपन्त जी का अपने घर जैसा ही सम्बन्ध था। गांव के सभी बच्चे आपके मित्र परिवार में सम्मिलित थे। मैत्री करते समय रंग-रूप, जात-पात, अमीरी-गरीबी यह भेद आपके पास नहीं थे। करमुरकर होटल में पकोड़े तलने वाला बकाराम आपका बचपन का साथी आज भी आपका अभिन्न हृदय मित्र है। श्री बकाराम एक वनवासी परिवार से हैं और अब छोटे से होटल में काम करते हैं। 'विलायत से भी दत्तोपन्त मुझे चिट्ठी लिखते हैं' श्री बकाराम ने कहा।

बकाराम १९४२ के आन्दोलन में १० महीने जेल काट चुके हैं। स्वतन्त्रता सेनानी होते हुए भी उनकी पेन्शन के लिये किसी ने ध्यान नहीं दिया। गांव में सभी कॉंग्रेस वालों की पेन्शन शुरू हो गई थी। जब श्री दत्तोपन्तजी को यह बात पता चली तो उन्होंने श्री बकाराम के लिये प्रयत्न किया। आज बकाराम को रु. ३००/ पेन्शन मिलती है। उन्हें पूछा गया 'आपको पेन्शन किसने दिलाई' ? महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री अन्तुले जी ने दिलाई क्या ? श्री बकाराम ने कहा "नहीं, अन्तुले ने नहीं दत्त ने दिलवाई"।

श्री त्र्यम्बकराव गिरधर जी ने एक प्रसंग बताया। १९३१-३२ साल की घटना है। मा० अप्पा जी जोशी गाँव पधारे थे। आपने गांव के सभी बच्चों को बातचीत के लिये इकट्ठा बुलाया था। आपने बच्चों से पूछा 'माताजी श्रेष्ठ हैं या पिताजी' ? सभी बच्चों ने अपने विचार कारण सहित बताये। मा० ठेंगड़ी जी ने कहा 'मां श्रेष्ठ है' और फिर आधा घंटा आपने' माता-माहात्म्य सुनाया। इन जैसे छोटे बच्चे का यह पांडित्यपूर्ण प्रवचन सुनकर सभी मुग्ध हो गये। मा० अप्पाजी ने कहा यह बच्चा बहुत ही बड़ा बनेगा।

आर्वी नगर परिषद् के सेनेटरी इन्सपेक्टर पद पर अवकाश प्राप्त श्री मोतीसिंहजी गौड़ बता रहे थे कि एक भाषण प्रतियोगिता थी जिसका विषय था 'शिवाजी'। छोटे बड़े सभी बच्चे उसमें सम्मिलित थे। लेकिन प्रथम पुरस्कार तो छोटे दत्त (मा० दत्तोपन्त)को ही मिला। कुछ नकद इनाम भी। इनाम में मिले पैसे लेकर दत्त सीधे संघचालक जी के घर गया। संघचालक जी ने उसे कहा कि पैसे गुरु दक्षिणा के लिए अपने पास ही रख लो।

आर्वी के जिस नगरपालिका विद्यालय से मा० दत्तोपन्त जी ने मैट्रिक किया था उसी विद्यालय के सेवा निवृत्त मुख्याध्यापक श्री नेत्राम खिवराज हरजाल जी ने कहा। 'लोकमान्य लायब्रेरी का विदर्भ में उस समय पहला स्थान था। सन् १८६५ में स्थापित उस लायब्रेरी में हजारों किताबें थीं। लेकिन मैट्रिक करने से पहले ही दत्तोपन्त पूरी लायब्रेरी पढ़ चुके थे। बड़ी-बड़ी किताबें भी आप एक एक दिन में पढ़ लेते थे।

विदेश यात्रा की लेकिन आज भी आर्वी के लोगों को दत्तोपन्त अपने से दूर गये ऐसे लगता नहीं है। मा० दत्तोपन्त जी को भी आर्वी आते ही 'घर' पहुंचने का आनन्द मिलता है। मा० दत्तोपन्त चाहे रात के बारह बजे पहुंचे हों आप किसी घर जाकर अपनी उस घर की भाभी से कहते 'भाभी भूख लगी है' और रात के १-२ बजे भाभी बड़े स्नेह से अपने इस लाडले देवर को गरम गरम खाना खिलाते समय स्वयं को धन्य धन्य मानती है। श्री दिनकर राव जी देशपांडे कह रहे थे 'दत्तोपन्त कितने ही बड़े क्यों न हों सभी आर्वी आने पर अपने घर आपके आने के इन्तजार में रहते हैं।'

श्री बकाराम ने कहा 'दत्तोपन्त इतने बड़े हैं, विलायत भी होकर आये लेकिन अभी रास्ते में मिलते हैं तो कंधे पर हाथ रखकर बचपन के साथी की तरह चलते हैं। आर्वी आने से पहले मुझे पत्र लिखते हैं—आ रहा हूं। भला मनुष्य, जरा भी खोटा नहीं। देव मनुष्य।

—मोरेश्वर

× — × — × — ×

सर्वश्री हरजाल मोहरील, पेंडके, देशपाण्डे, गौड़ आदि मा० ठेंगड़ी जी के सभी बालमित्र आज फिर से अपने बचपन की यादों में खो गये थे। आपने मा० ठेंगड़ी जी का बाल्यकाल शब्दों में साकार कर दिया।

मा० दत्तोपन्त जी का बाल्यकाल मानो एक फास्ट ट्रेन थी। आप हमेशा पढ़ते रहते थे। 'बोर हो गया' यह आपके शब्दकोष में था ही नहीं। आत्यंतिक स्मरण शक्ति से छोटे बड़े सभी प्रभावित होते थे। हाईस्कूल के प्रधानाध्यापक श्री शंकरराव देशमुख आपको प्रोत्साहन देते थे। कक्षा में आपका सदा प्रथम या किंचित दूसरा स्थान होता था। मराठी तो आपकी मातृभाषा है ही लेकिन हिन्दी, इंग्लिश तथा संस्कृत भी आप उसी तरह लिखते, पढ़ते तथा बोलते थे।

कैसे भाव की पोलिटिक्स की दृष्टि से मा० दत्तोपन्तजी एकदम (अनफिट) व्यक्ति हैं। अन्दर एक बाहर दूसरा यह आपके स्वभाव में ही नहीं है । इस दुनिया का व्यावहारिक व्यवहार आपको पता नहीं है। घुटने तक की धोती, शर्ट तथा सफेद टोपी यह उनका उस समय का वष रहता था। उसी के अनुसार अत्यन्त सीधा स्वभाव। इस सीधे स्वभाव के कारण इस व्यवहारी दुनिया में आपको काफी नुकसान उठाना पड़ा। कई घटनाएं सुनी । लेकिन पूरे विश्व की चिन्ता करने वाले मा० दत्तोपन्तजी को अपने परिवार की ओर ध्यान देने का समय कहां था ? ग्यारहवीं पास करते ही आप आर्वी छोड़कर नागपुर पहुँचे । वहां मॉरिस कॉलेज से बी. ए. करने के बाद आपने नागपुर में ही लॉ की परीक्षा भी पास करली । आप छुट्टियों में आर्वी जाते थे तब मित्र परिवार में नये उत्साह का संचार होता था।

आप संघ के प्रचारक बने, इंटक कार्यकर्ता बने, भा० म० सं० स्थापन किया, संसद सदस्य बने।

× × ×

कामगार संघटना के आगे व्यक्तिगत प्रतिष्ठा गौण

भारतीय मजदूर संघ का अखिल भारतीय अधिवेशन बम्बई में षणमुखानन्द हाल में हो रहा था। सन् १९७२ को घटना है। मजदूर संघ के अधिवेशन में दूसरी संघटनाओं के कामगार नेता बुलाकर उनके विचार सुनना यह कल्पना मा० दत्तोपन्तजी की ही है। विविध संघटनों के नेता आज तक भा० म० सं० के व्यासपीठ पर आये हैं । सन् १९७२ के इस अधिवेशन में विख्यात गोदी कामगार नेता श्री एस० आर० कुलकर्णी आये थे। उस समय उन्होंने बताया "श्री ठेंगड़ीजी थे इसलिये हम सब इकट्ठे आ सके।

२० अगस्त, १९६३ को 'बम्बई बन्द' कार्यक्रम था। उस समय एक मात्र कामरेड डांगे जी को छोड़कर बाकी सभी कामगार संघटन इकट्ठे हुए थे । यह एक बहुत बड़ा आश्चर्य था लेकिन उनको वास्तव में एकत्र लाने का सम्पूर्ण श्रेय मा० ठेंगड़ी जी को ही मिलेगा। इस चमत्कार के निर्माता थे, मा० ठेंगड़ी जो।

श्री एस० आर० कुलकर्णी ने जो घटना बतायी उस प्रसंग को मैंने अपनी आंखों से देखा है। उस समय की सभी घटनाऐं मैंने नजदीक से देखी है। ऐसे प्रसंग सभी कार्यकर्ताओं को प्रेरणा तथा मार्ग दर्शन देने वाले हैं । भा० म० सं० के इतिहास की यह एक महत्व की घटना है— विविध दृष्टि से।

'बम्बई बन्द' का नारा लगाने वाला पत्रक श्री डांगे तथा लिमये जी ने प्रसारित किया। भा० म० सं० उस समय संख्याबल तथा महत्व, दोनों दृष्टि से दुर्बल था। बम्बई

में तो नगण्य था । लेकिन कामगार क्षेत्र में बड़े जोश से आगे आने की उम्मीद थी । इसके लिये जरूरी था एकाध बार श्री डांगे जी को जबरदस्त धक्का देना । कम्यूनिस्टों को जरा सा धक्का दिये बिना प्रगति असम्भव थी ।

श्री ठेंगड़ी जी को कुछ वरिष्ठों ने सलाह दी कि आवश्यक मांगों को लेकर 'बम्बई बन्द' होने में कोई गलत बात नहीं है लेकिन अगर आप आगे आना चाहते है तो आपको श्री डांगे जी को पृथक रखकर कार्यक्रम यशस्वी करना होगा ।

यहीं से ठेंगड़ीजी की भूमिका शुरू हुई । आप श्री मधुलिमये जी से मिले और आपने सहकार्य (साथ) देने की इच्छा प्रकट की । श्री लिमये से श्री दत्तोपन्त जी की इस प्रकार बातचीत हुई—

श्री लिमये— आपकी ताकत कितनी है ?

श्री ठेंगड़ी— कुछ भी नहीं ।

श्री लिमये— तो आपके सहकार्य से हमें क्या लाभ होगा ?

श्री ठेंगड़ी— श्री डांगेजी की मदद के बिना कार्यक्रम सफल हो सकता है ।

श्री लिमये— कैसे ?

श्री ठेंगड़ी — हिन्दु मजदूर पंचायत, हिन्दु मजदूर सभा, भा० म० संघ, यू० टी० यू० सी० तथा अन्य कुछ स्थानीय सगठन एकत्र होकर यह कार्य कर सकते हैं ।

श्री लिमये - सही है । लेकिन ये सब एकत्रित कैसे आ सकते हैं ? इनमें से इन सब संस्थाओं के नेता एक दूसरे का मुंह देखना पसन्द नहीं करते ।

श्री ठेंगड़ी— ये मेरी जिम्मेदारी रही । इतना तो मैं करके दिखा सकता हुं ।

इस प्रकार की चर्चा के बाद श्री लिमये जी ने श्री ठेंगड़ी जी पर यह जिम्मेदारी सोप दी ।

श्री एस० आर० कुलकर्णी, श्री मधुलिमये तथा श्री ठेंगड़ी आदि नेताओं ने मिलकर 'बम्बई बन्द' का आह्वान किया । श्री ठेंगड़ी जी के प्रयास से इस 'बन्द' को चारों ओर से समर्थन मिलने लगा । केवल डांगेजी ने शुरू में विरोध दिखाया लेकिन फिर हवा का रूख देखकर श्री डांगे ने भी बन्द से एक दिन पहले समर्थन में पत्रक निकाला ।

कम्यूनिस्टों के हाथ से आन्दोलन का नेतृत्व जाते देखकर ही श्री डांगे की हालत खस्ता हो गई थी। इस प्रकार सभी भारतीय संगठनों को एक मंच पर लाकर कम्यूनिस्टों को झटका देने वाले सूत्रधार थे मा० दत्तोपन्त जी ठेंगड़ी। एक नगण्य संगठन के नेता।

स्वाभाविक ही बन्द यशस्वी हो गया। सायंकाल आजाद मैदान में कामगार सम्मेलन था। व्यासपीठ के नजदीक ही श्री ठेंगड़ी, कुलकर्णी, मधु लिमये आदि नेता खड़े थे। सभा के नियोजित अध्यक्ष श्री ना० ग० गोरे वहां पहुँचे। कामगार जत्थों में वहां पहुँच ही रहे थे। सफलता का विजय पर्व अब मनाया जाना था। सभी उत्साहित थे। पर एक नई समस्या सामने आई। श्री गोरेजी ने श्री ठेंगड़ीजी को देखकर श्री लिमये से पूछा कि ये सज्जन यहां कैसे ?

श्री लिमये ने पार्श्व भूमिका बताई और आज के इस सफल कार्यक्रम के सूत्रधार श्री ठेंगड़ीजी हैं यह भी स्पष्ट किया।

श्री गोरे—लेकिन ये संघ वाले हैं और मेरा नियम है कि मेरी अध्यक्षता में जो सभा होगी उसमें कोई भी आर० एस० एस० वाला भाषण नहीं दे सकता।

श्री ठेंगड़ी— यह सत्य है कि मैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का स्वयंसेवक हूं।

श्री लिमये— (दुविधा में पड़े हुए) लेकिन नाना साहब इस सभा में श्री ठेंगड़ी जी की उपस्थिति अनिवार्य है।

श्री गोरे— तो ठीक है। इनका भाषण होने दीजिये मैं अध्यक्षता नहीं करूंगा।

अब तक मैदान में हजारों कामगार इकट्ठे हो चुके थे। थोड़ी ही देर में सभा प्रारम्भ होने वाली थी। प्रमुख कार्यकर्ता नेताओं के पास एकत्रित हो रहे थे। प्रसंग बहुत ही कठिन था। श्री गोरेजी का नाम पहले ही छप चुका था। उनको कामगारों ने भी देख लिया था। उनके अध्यक्ष न रहने का कोई भी कारण बनाना व्यर्थ था और मा० ठेंगड़ीजी का भाषण होना भी उतना ही अनिवार्य था। दिन भर की सफलता को अब कालिख लगने का डर पैदा हो गया। लेकिन मा० दत्तोपन्तजी की दृष्टि में संस्था के हित के सामने व्यक्तिगत प्रतिष्ठा हमेशा ही नगण्य रही है इसलिये श्री ठेंगड़ीजी ने कहा 'मैं मंच पर नहीं चढ़ूंगा और न भाषण दूंगा। नाना साहब ही अध्यक्षता करेंगे। मुझे उसमें कोई आपत्ति नहीं है।

मा० ठेंगड़ीजी को आपत्ति हो या न हो लेकिन उनका भाषण नहीं होता तो कामगार जरूर नाराज हो जाते और अभी तक की सफलता पर पानी फिर जाता। आखिर श्री लिमये, कुलकर्णी ने रास्ता निकाला। उन्होंने कहा कि स्वागत भाषण

श्री ठेंगड़ीजी का होगा और अपने भाषण के अन्त में श्री ठेंगड़ीजी श्री गोरे को अध्यक्षता स्वीकार करने की प्रार्थना करेंगे। यह बात सभी को मंजूर हो गई। श्री गोरे के नियम में बाबा नही आई और कामगारों में यह अनुचित बात नहीं फैली।

यह प्रसंग अब पुराना हो गया है। इसका महत्व भी केवल ऐतिहासिक घटना जितना ही है लेकिन उस प्रसंग से लेकर धीरे-धीरे यह समय भी आया कि आपातकाल में लोक संघर्ष समिति के मा० दत्तोपन्तजी ठेंगड़ी सेक्रेटरी थे और श्री ना० ग० गोरे तथा मा० ठेंगड़ी जी ने उसमें मिलकर महान् कार्य किया।

विरोधक भी नितान्त स्नेही

श्री दत्तोपन्तजी के वैयक्तिक सम्बन्ध सभी लोगों से आत्मीयता तथा निष्कपट स्नेह के हैं। आपके प्रतिस्पर्धी तथा पक्के विरोधक (कार्य की दृष्टि से) व्यक्तिगत जीवन में आपके कितने निकटस्थ स्नेही रहते हैं इसका एक ही उदाहरण पर्याप्त है।

सुप्रसिद्ध मार्क्सिस्ट नेता तथा सी० आई० टी यू० के महामंत्री श्री पी० राममूर्ति का ७५ वां जन्मदिन था उस दिन आपने अपने ४ अत्यन्त निकटस्थ स्नेही भोजन पर बुलाये थे। उनमें से तीन थे प्रख्यात मार्क्सवादी नेता सर्वश्री सुन्दरैया, बी० टी० रणदिवे, श्री एम० एस० नम्बूद्रीपाद तथा चौथे परम स्नेही थे श्री दत्तोपन्त ठेंगड़ी।

● बाल सिंडे

मनुष्य जीवन के समान ही राष्ट्र जीवन का भी एक लक्ष्य होता है, उसे पहिचान कर ही हमें कार्य करना चाहिये। सम्पूर्ण ससार के हितार्थ अपना योगदान देने की दृष्टि से ही हमने अपनी सम्पूर्ण गतिविधियों का निर्धारण किया है। परन्तु समस्त संसार को ज्ञान देने की बात करने से पूर्व हमें अपनी ओर देखना पड़ेगा। आज स्थिति यह है कि हमें स्वयं का ही विस्मरण हो गया है। सर्व प्रथम हमें सम्पूर्ण समाज को उसके जीवन लक्ष्य का अनुभूति करानी होगी। अपना कार्य यहां से प्रारम्भ करना पड़ेगा कि हम कौन हैं ? और दुनियां में किसलिए आए हैं ? इस महान् लक्ष्य से सम्पूर्ण समाज को अनुप्राणित करना हमारा प्रथम कार्य है। देश की वर्तमान दयनीय स्थिति में यहां के समाज की प्राथमिक आवश्यकताएँ भी पूर्ण नहीं हो पा रही हैं। दो बार पेट भरने के लिए भी हम अन्न नहीं जुटा सकते तो फिर विचार करें इस दुःखद अवस्था में क्या हम संसार को कुछ दे सकते हैं ?

पारदर्शी

श्री दत्तोपन्त ठेंगड़ी

★ ना० बा० लेले, दिल्ली

श्री समर्थ रामदास, श्री रामकृष्ण परमहंस, ईसामसीह आदि महापुरुषों के सान्निध्य में जो कोई विशेष लोग रहते थे उन भाग्यवान लोगों को ही परम शिष्य, शिष्योत्तम तथा अंतरंग अनुयायी कहा जाता है। विगत २५ वर्षों से मजदूर नेता के रूप में विख्यात मा० दत्तोपन्त ठेंगड़ी भी वैसे ही भाग्यवानों में से एक हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरुजी के ३३ वर्ष के कर्तृत्व-पूर्ण कालखंड में उनके अत्यन्त निकटस्थों में थे श्री ठेंगड़ी जी। श्री गुरुजी से जिन्होंने अक्षरशः वरदान पाया है, जिनके सिर पर श्री गुरुजी का वरद हस्त था ऐसे प्रमुख कार्यकर्ताओं में से मा० ठेंगड़ीजी एक हैं। श्री गुरुजी की असीम संस्कारक्षमता में ऐसे असाधारण कार्यकर्ताओं की परम्परा निर्माण हुई है। सद्यस्थिति में समाज ऐसे कार्यकर्ताओं के कर्तृत्व का मूल्यमापन कर रहा है यह शुभ लक्षण ही मानना चाहिये।

मा० दत्तोपन्तजी का शुभाभिनन्दन करते समय प्रथम यही शुभलक्षण मन में आता है। स्मारिका के सम्पादक मंडल की योजना से खासदार श्री दत्तोपन्त ठेंगड़ी (भू० पू० राज्य सभा सदस्य) का दर्शन कराने का काम मेरे जिम्मे था। लेकिन इतना कालखंड ही आपका समग्र जीवन दर्शन नहीं हो सकता। इस दृष्टि से उसमें से कुछ आवश्यक भाग ही देखेंगे।

मा० ठेंगड़ी जी व पूना से श्री मोहन धारिया दोनों राज्य सभा में इकट्ठे ही प्रविष्ट हुए और दोनों की संसद-निपुणता का परिचय शुरू से ही मिल रहा था। साथ ही दोनों के गन्तव्य स्थान अलग हैं इसका भी अनुभव हो रहा था। श्री मोहन धारिया जी का 'सफर' (आपके लिखे हुए ग्रन्थ का नाम) उनको ज्ञात है ही। उस विषय में और क्या लिखें ? लेकिन खासदार ठेंगड़ी जी के सम्पर्क में जो-जो व्यक्ति आया उस हरेक ने यह अनुभव किया कि यह व्यक्तित्व कुछ अलग ही है।

दीनदयाल बिरुद संभारी

उस समय मा० दत्तोपन्त जी ठेंगड़ी दिल्ली में साउथ एवेन्यू में रहते थे। इससे

पहले भी आप कई बार खासदार प्रेमजी भाई आसर के आश्रय से रहे थे । अब आप खासदार नहीं हैं लेकिन आपके सम्बन्ध वहां कायम हैं । साउथ एवेन्यू में एक नाई की दुकान है उसमें नट-नटणियों के चित्र नहीं हैं । वहां भूतपूव राष्ट्रपति श्री फखरुद्दीन अली अहमद, भू० पू० स्थल सेनाध्यक्ष जनरल चौधरी, भू० पू० विधि मंत्री श्री अशोक सेन आदि प्रमुख व्यक्तियों के चित्र लगे हुए हैं और उन्हीं के साथ एक और चित्र है अपने श्री ठेंगड़ी जी का ।

दीन दुखियों की सहायता करना – दीन दयाल विरुद संभारी यह उक्ति अपने दैनन्दिन व्यवहार में सार्थक करने का यह अनुपम व्यवहार मा० ठेंगड़ी जी के साउथ एवेन्यू निवासकाल में कितने लोग अनुभव कर चुके हैं । उपरिनिर्दिष्ट केशकर्तनालय का मालिक एक पैगम्बर मोहम्मद साहिब का उपासक है । उससे मा० दत्तोपन्त जी के विषय में बात की जाय तो उसकी आंखों में कृतज्ञता तथा अत्यन्तिक आनंद से आंसू भर आते हैं । वह अभिमान से मा० ठेंगड़ी जी के संस्मरण बताने लगता है । वह कहता है कि वह फांसी के फन्दे पर चढ़ा दिया गया होता लेकिन मा० ठेंगड़ी जी की दुआ से बच गया । वह हाथ जोड़कर भगवान से प्रार्थना करता है "ठेंगड़ी जी को सदा सुखी रखो, चिरायु करो" ।

सभी लोगों का आदर स्थान

उपर लिखी हुई बात कुछ लोगों को अच्छी नहीं भी लगी हो लेकिन फिर भी यह प्रसंग इसलिये लिखा है कि चाहे ठेंगड़ी जी संसद सदस्य रहे या न रहे उनका स्वभाव या स्थायी भाव का पता चले ।

मा० ठेंगड़ी जी के स्थायी भाव का आधार है उनकी अकृत्रिम आत्मीयता । इसी कारण केवल किताबों में पढ़कर (हाऊ टू विन फ्रेन्डस) आपको व्यवहार नहीं करना पड़ता । आपके अकृत्रिम आत्मीयता पूर्ण व्यवहार के कारण आप सदा ही सुहृदों से घिरे रहते हैं । इस स्वभाव के कारण आपको कई कष्ट उठाने पड़े हैं । साउथ एवेन्यू में आपका निवास स्थान के पूर्णतया मेहमानों से भरे रहने के कारण कई बार आप अपने ही निवास के किसी कोने में या बाहर लॉन में बिना कुछ ओढ़े हुए सोते देखे गये हैं । तेज बुखार में भी लेटे लेटे आपका सभी से मिलना-जुलना चलता रहता है । मिलने वालों को चाय नाश्ता भी कराया जाता है । आखिर कभी-कभी मेरे जैसे को विधि-निषेध एक तरफ रखकर मा० दत्तोपन्त जी की नाराजगी को भी नजरअन्दाज करके यह बीमारी में मिलना-जुलना, चाय-नाश्ता जबरदस्ती बन्द करना पड़ता था । फिर भी स्वयं के वहां से जाते ही यह सारा उद्योग फिर शुरू हो जाता था । उनका स्थायी-भाव दिखाई देता और अपनी हार । अनुभव होता है यह असाधारण व्यक्तित्व है । ऐसे अन्दर बाहर से स्वच्छ अकृत्रिम "पारदर्शक" सहज व्यवहार के कारण राजकीय मतभेद, पक्षभेद आदि

दोवारें लांघकर सभी पक्षों के, सभी मतों के तथा सभी स्तरों के व्यक्ति आपके स्नेही तथा सहकारी भी हैं । चाहे वे कै० डा० वी० वी० गिरि हों, श्री बी० डी० जत्ती हों या इन्दिरा कांग्रेस के श्री गुलाबराव पाटिल हों । सभी नामों का उल्लेख करना हो तो सहस्रनामावलि लिखी जायगीं ।

स्वयं ना० गिरि की सूचना

उपराष्ट्रपति श्री गिरि के उल्लेख में एक बात याद आई । ई० सन् १९६२ में एक संसदीय प्रतिनिधि मंडल रशिया भेजना था । उपराष्ट्रपति श्री गिरी ने राज्य सभा अध्यक्ष के नाते सांसद श्री ठेंगड़ी जी से कहा कि आप वहां अवश्य जावेंगे और वहां की परिस्थिति का अध्ययन करके उसकी सम्यक् जानकारी मुझे देंगे ।

क्योंकि इसके कुछ ही दिनों बाद श्री गिरी स्वयं रशिया जाने वाले थे । संसदीय प्रतिनिधि मंडल में दूसरे अनेक सदस्य होते हुए भी उपराष्ट्रपति ने मा० ठेंगड़ी जी से ही रशिया जाने का आग्रह किया क्योंकि श्री गिरि मजदूर नेता थे श्री ठेंगड़ी भा मजदूर नेता हैं । श्री गिरि को विश्वास था कि श्री ठेंगड़ी जो परिस्थिति अवलोकन करके मुझसे विचार करेंगे वही श्री गिरि को उपयुक्त रहेगा । इससे पता चलता है कि मा० ठेंगड़ी जी ने कैसे कैसे लोगों का विश्वास सम्पादन किया है । मा० ठेंगड़ी जी के इस रशिया प्रवास के दौरान इस संसदीय प्रतिनिधि मंडल में प्रकांड पंडित कम्यूनिस्ट नेता श्री हिरेन मुखर्जी भी साथ थे । इस यात्रा में दोनों की अच्छी दोस्ती हो गई । दोनों ही संस्कृत तथा अंग्रेजी वाङ्मय भक्त और दोनों के स्वभाव में समान ऋजुता ।

रशिया प्रवास इतने अल्प स .य में तय हुआ कि वहां की सर्दी की दृष्टि से आवश्यक नये कपड़े बनवाने का समय नहीं था और सांसद बनने के बाद भी आपका व्यवहार, रहन-सहन, पूर्ण सादगी का ही था । इसलिये नये-नये कपड़े और अलग-अलग जूते चप्पल आपके पास कहां तैयार मिलते । अपने किसी मित्र के गरम कपड़े, नाड़े वाले जूते वगैरे इकठ्ठे करके आप रशिया गये ।

मार्क्सवाद प्रत्यक्ष देखा

रशिया प्रवास के बाद "जनता राज्य" में उस समय के केन्द्रीय श्रम मंत्री श्री रविन्द्र वर्माजी के आग्रह से श्री ठेंगड़ी अन्तर्राष्ट्रीय कार्य श्रम संगठन (आई०एल०ओ०) की बैठक में भारत के प्रतिनिधि के रूप में ठोस कार्य करके आये हैं । इस समय आप सांसद नहीं थे लेकिन विधायक विचारण वाले मजदूर नेता होने से आप जिनेवा में हुए इस महत्त्वपूर्ण सम्मेलन में सम्मिलित हो सके । पहले रशिया प्रवास से भी अब के इस विदेश यात्रा से ठेंगड़ी जी की भाव-निधि में वृद्धि हुई । विशेषतः कम्यूनिस्ट रशिया के साथ

अलगाव रखने वाले पूर्वी योरोप के मार्क्सवादियों के मर्मस्थान पर अंगुली निर्देश करके आपने सहकारियों को भी चकित किया । सांसद के नाते आपने राज्य सभा में कितने प्रश्न पूछे या कितने भाषण दिये इससे भी अधिक महत्व इस बात का है कि आपने अपने अंगीकृत कार्य के लिये अपनी अनुभव निधि को कितना समृद्ध किया ।

कांग्रेस पक्ष के वरिष्ठ सदस्य श्री जयसुखलाल हाथी जब केन्द्रीय श्रम मत्री थे तब वे श्री ठेंगड़ी जी से अनौपचारिक रीति से औद्योगिक अशान्ति के बारे में विचार-विमर्श करते थे । अपने निवास स्थान पर श्री ठेंगड़ी जी को बुलाकर घटों तक बातचीत करके विचारों का आदान-प्रदान होता था ।

इन सब बातों से आपके व्यवहार का जो एक सूत्र दृढ़ सूत्र है उसकी झलक पाठक वर्ग को विशेषतः आपके चाहने वाले तथा समर्थकों को ज्ञात हो इसी उद्देश्य से यह लेख है।

स्थित प्रज्ञ श्री दत्तोपन्त जी

मा० दत्तोपन्त जी के जीवन का अर्द्ध शतक ऐसे विविध अनुभवों से समृद्ध है पर उनमें से कुछ ही पहलू इस स्मारिका के माध्यम से सामने आयेंगे। आज की परिस्थिति में इतना कह सकते हैं कि अतिशय व अमर्याद परिश्रमों का परिपाक है मा० ठेंगड़ी जी। सतत संघर्षमय मजदूर संगठन ऐसा समीकरण जब दृढ़ था तब अपने अविश्रान्त परिश्रम व प्रतिभा से मजदूर संघटन को विधायक रूप देकर मज़बूत नींव डालते समय भी ठेंगड़ी जी को विरोधियों से शारीरिक आघात भी सहने पड़े हैं । मा० ठेंगड़ी जी ने यह बात शायद किसी से न कही हो। ये विरोधक पूंजीपति नहीं थे, तो भारतीय मजदूर संघ की सफलता से जिनके पैरों के नीचे से धरती खिसक गई थी ऐसे मजदूर नेता थे ।

देर रात तक मा० ठेंगड़ी जी कार्यवृद्धि के लिये घूमते रहते हैं । कुछ वर्ष पूर्व उनका पीछा करके अंधेरी रात में नागपुर की गलियों में उनपर हमला किया गया। लोहे की सलाख से आपकी गरदन पर, कंधे पर चोटें आईं। हम सबके भाग्य से ही मा० ठेंगड़ी जी उस दिन बचे।

एक समय के उनके सहाध्यायी, बाद में जो आपके पालक भी (आज दिवंगत) ऐसे व्यक्ति से विश्वसनीय रूप से पता चला इस घटना का । उल्लेख इसलिये किया है कि यह भी एक ईश्वरीय योजना थी ऐसा सोचकर माननीय दत्तोपन्तजी ठेंगड़ी आध्यात्मिक दृष्टि से इस घटना को भूल गये होंगे लेकिन उनके सहकारी तथा समर्थक इस घटना से बोध ले सकते हैं ।

श्री दत्तोपन्त जी के मन का संतुलन कभी भी बिगड़ता नहीं है । आप अनन्य साधारण हैं। स्थित प्रज्ञ हैं।

×××

संस्मरण

ब० श० दाते

'संघ कार्य करने हेतु मैं केरल में प्रचारक था' मा० दत्तोपन्तजी बता रहे थे।

एक प्रतिष्ठित वकील साहिब के घर पर मैं रहता था। मुझे स्थान मिला था गैरेज में। संघ कार्य चल रहा था। कुछ दिनों बाद वकील साहब ने बुलवा भेजा और हमारी बातचीत शुरू हुई।

"आप जिन्दगी भर अविवाहित-ब्रह्मचारी रहेंगे क्या ? रह सकेंगे क्या ?"

"मेरे जीवन में, दैनन्दिन जीवन में, संघ कार्य है तब तक मैं इसी प्रकार रहूंगा, रह सकता हूँ। अगर किसी कारण से मैं इस कार्य से दूर हो गया तो क्या होगा ? यह मैं नहीं कह सकता।"

वकील साहब कुछ देर के लिये अवाक् हो गये और उस ही दिन से मेरा स्थानान्तरण बंगले के कमरे में हो गया। संघ कार्य भी चलता रहा।

× × × ×

"आप कभी पिक्चर देखते हैं" ?

"हाँ कभी-कभी। ६ महीने पहले दिल्ली में मा० लालकृष्ण अडवानी और भाभीजी के साथ पिक्चर देखने गया था।"

कौनसी पिक्चर देखी ?

"याद नहीं।"

× × × ×

'दत्तोपन्तजी ! आपने आपात्काल में इतना काम किया । देश भर में प्रवास करते रहे। विविध नेताओं से मिले । इन सब अनुभवों की आप भी एक किताब लिखकर दीजियेना' ? (एक प्रकाशक.

मा० ठेंगड़ी जो हंसते हुए विषय बदल देने की कोशिश में— जब प्रकाशक पीछे ही पड़ते हैं तो स्पष्ट जवाब मिलता है— "आपात्काल में मेरा किया हुआ कार्य अत्यल्प है। संपूर्ण आन्दोलन का सम्यक ज्ञान माननीय माधवराव जी मुले को है । इस विषय में अगर कुछ लिखना उचित लगता हो तो मा० माधवराव जी ही लिखेंगे या मुझे आज्ञा देंगे"।

सामने वाला व्यक्ति चुप हो जाता है।

× × × ×

"संघ पर से प्रतिबन्ध उठाने के बारे में क्या समाचार है", "ऐसा क्यों नहीं करते", "अब संघ की भूमिका क्या रहेगी" ? आत्मीयता से ऐसे अनेक प्रश्न पूछे जाते हैं।

'स्थानीय नेताओं से मिलने का क्या लाभ' ? आप अभी कहां से आये ? कहां जायेंगे ? अनेक प्रश्न।

माननीय ठेंगड़ी जी का जवाब— 'परिणाम पता नहीं क्या होगा'।

मा० माधवराव जी द्वारा दिया हुआ कार्य करना है। अभी यही विचार मन में है। रात की गाड़ी से बंगलोर जाना है। गाड़ी में स्थान मिलेगा क्या ? बंगलोर में जिनसे मिलना है वे मिलेंगे कि नहीं ? मा० माधवराव जी द्वारा बताया हुआ कार्य पूर्ण होगा या नहीं, मेरे मन में यही विचार चल रहे हैं । केवल आज्ञापालन यही अपना काम। बताया हुआ कार्य पूरा करना यही अपन जानते हैं'।

इस पर हमारे बिना मतलब के प्रश्न अपने आप समाप्त हो जाते हैं। क्योंकि सामने खड़ा दिखता है— अनुशासित कर्मयोगी स्वयंसेवक ।

"मेरा प्रचारक" खोना मत

बाल भिडे

"Send Krishna Moharir Immediately"

—Bapuji Thengadi

नागपुर संघ कार्यालय में परम पूज्यनीय गुरुजी के नाम से तार आया। प्रेषक थे माननीय श्री दत्तोपन्त जी के पिताजी, आर्वी के ख्यातिनाम एडवोकेट बापूजी ठेंगड़ी।

चालीस वर्ष पूर्व की घटना है। मान० दत्तोपन्त जी बी० ए०, एल० एल० बी० कर चुके थे। एडवोकेट बापूजी संघ को जानते थे, लेकिन उनकी इच्छा थी कि "बेटा वकालत करे। एक अच्छी बहू घर लाये और गृहस्थी संभालते हुए थोड़ा संघ कार्य करे।" एक पिता की स्वाभाविक अपेक्षा थी।

लेकिन एक दिन मा० दत्तोपन्त जी ने अपनी माता के द्वारा, अपना रा० स्व० सं० के प्रचारक बनने का निर्णय पिताजी तक पहुँचाया। मा० दत्तोपन्त जी इस समय आर्वी में ही थे, लेकिन खुद पिता के सामने नहीं आये। पिताजी ने साक्षात् जामदग्नि रूप धारण किया व सीधे माननीय कृष्णराव मोहरिर जी को बुलाने का तार दे दिया। माननीय कृष्णराव-माननीय ठेंगड़ी जी के सहाध्यायी एवं रा०स्व० संघ के प्रचारक थे।

तार पाते ही प० पू० श्री गुरुजी ने कृष्णराव जी को आर्वी जाने के लिए कहा।

श्री कृष्णराव ज़ी ने कहा, "आपके कहने पर मैं चला तो जाता हूँ परन्तु उनसे मैं क्या बात करूं ?" श्री कृष्णराव जी ने अपनी समस्या बताई।

श्री गुरुजी ने कहा, "इसमें अनपेक्षित कुछ भी नहीं है। दत्तोपन्तजी प्रचारक निकल रहे हैं, अतः बापूजी नाराज हो गए होंगे। उन्होंने बुलाया है, तो मिल अवश्य आना।"

श्री गुरुजी की आज्ञानुसार श्री कृष्णराव जी जाने लगे। गुरुजी ने उन्हें वापस बुलाया और कहा, "कृष्णराव ! आप आर्वी

जा रहे हैं, उनकी बातों में आकर उनकी हां में हां मिलाओगे। मेरा प्रचारक गंवा दोगे। सावधान रहना। दत्तोपन्त जी के प्रचारक निकलने में बाधक हो, ऐसी कोई भी स्वीकारोक्ति न करना। मेरा प्रचारक खोना नहीं।"

प० पू० गुरुजी से आशीर्वाद लेकर मान० कृष्णराव आर्वी आ पहुँचे।

आगे का वृत्तांत मान० कृष्णराव जी के मुख से सुनने में ही अधिक आनन्द आयेगा मा० कृष्णराव जी ने कहा ....

"पत्तरकिने, सालपेकर, इन्दापवार, ढ़ोक, वेलेकर, तिजारे, कोठेकर, वहाड़पांडे, इंदूरकर, ठेंगड़ी, मोहरीर, फड़णवीस ऐसे अनेक परिवार नजदीक-दूर के रिश्ते से एक-दूसरे से जुड़े हुए थे। एक ही अक्षय वट के ऊपर बने अनेक घोंसले! अतः सभी में घरेलू व्यवहार था। सभी परिवार धार्मिक थे, सामाजिक कार्यों की रुचि सभी में थी, राष्ट्र-भक्ति की भावना से सभी ओत-प्रोत थे। विशेषतः हमारे इस अक्षय-वट से अनेक दत्त-भक्त पुरुष उत्पन्न हुए, व उनकी पत्नियां सती-अनुसूया जैसी वात्सल्य-मूर्ती थी।

मान० दत्तोपन्त जो के माता-पिता भी इसी श्रेणी के थे, पिताजा ऊग्र, अत्यन्त व्यवस्थित, तेज, वहीं माताजी अत्यन्त सात्विक, सोज्ज्वल, प्रम-मयी, बच्चों से अत्यधिक स्नेह करने वाली। बापूजी का संघ से सम्बन्ध था। अण्णाजी बक्षी जैसे अनेक स्वयसेवक उनके मित्र थे, लेकिन बापूजो ज्यादा व्यवहारी थे, अतः दत्तोपन्त जी वकालत करें, गृहस्थी चलाएं ऐसी उनकी इच्छा थी। उनकी इच्छा से श्री गुरुजी परिचित न थे। श्री बापूजी की जैसी दत्तोपन्त जी के बारे में अपेक्षा थी, वैसे ही श्री गुरुजी भी दत्तोपन्त जी कुछ उम्मीदें लगाकर बैठे थे। "श्री दत्तोपन्त बी०ए०,एल०एल०बी० होगए, प्रचारक बनने योग्य हुए। उनकी अंग्रेजी भाषा पर भी अच्छी पकड़ है, अतः उन्हें केरल, बंगाल जैसे स्थानों पर भेजा जा सकता है।" पिता अपने आपत्य से जैसी अपेक्षा रखता है, वैसी ही गुरुजी के मन में दत्तोपन्त जी के लिए थी।

दत्तोपन्त जी भी ऐसे ही थे। संघ के सभी स्वयसेवकों के मन में दत्तोपन्त जी के प्रति नितांत आदर व स्नेह था। श्री दत्तोपन्त जी का जीवन स्वच्छ, निर्मल निर्झर जैसा है। आप तत्व चिंतक, विद्वान तो हैं ही, लेकिन कोरा पाण्डित्य नहीं व्यवहार भी वैसा ही है। प० पू० श्री डॉक्टरजी के सान्निध्य में पांच वर्ष व पश्चात् श्री गुरुजी के पास अनेक वर्षों तक रहने का सौभाग्य आपको प्राप्त हुआ। आप अत्यन्त मेधावी छात्र थे, मेरे से आयु में आप छोटे हैं, परन्तु एल० एल० बी० का अध्ययन साथ ही किया है। कॉलेज में भी आप सभी के अपने थे, लेकिन घर-गृहस्थी में आपकी रूचि नहीं थी। समाज-सेवा, राष्ट्र-सेवा यही आपकी प्रकृति थी। आप रा०स्व० संघ के निष्ठावान कार्यकर्ता थे। इन परिस्थितियों में आपको प्रचारक बनना जितना आवश्यक था, उतना ही कठिन था आपके पिताजी की अनुमति लेना।

मैं आर्वी जाने के बाद सर्वप्रथम वहां के संघचालक डॉ० देशपांडे के घर गया। उन्हें सारी स्थिति से अवगत करवाया। डॉ०

माँ ने कहा "अरे ! बापूजी बड़े गुस्से में है। कुछ बोलोगे तो तुम्हारी पिटाई भी हो सकती है।" मैंने डरते हुए घर में प्रवेश किया। अन्दर जाते ही पहले बापूजी को साष्टांग दण्डवत् किया। अपेक्षा थी प्रारम्भ में कुछ औपचारिक बातें होगी, परन्तु बापूजी ने पहले ही कह दिया, "मैं उसको प्रचारक नहीं भेजूँगा।" बस, ...विषय समाप्त ! मैंने कुछ बोलने की कोशिश की, तो बापूजी बरस पड़े, "वह अपने बाप को बाप नहीं कहता। कभी मेरे से पैसे भी नहीं मांगता। उसका नेता तो नागपुर में बैठा है। मैंने उसको पढ़ाया, उसकी दृष्टि से कारोबार इतना उन्नत किया, इतनी किताबें एकत्रित की, यह सब किसके लिए ? अब परिवार की जिम्मेदारी उसी की है, उसकी छोटी बहिन विवाह योग्य हो गई है, पर उसे तो किसी बात की चिन्ता ही नहीं है। वह खुद को क्या समझता है ? और ऊपर से तू आया है, मुझे सिखाने" बापूजी बोल रहे थे, सभी का उद्धार हो रहा था। दत्तोपन्त जी की माताजी का भी उद्धार हो रहा था, क्योंकि आप समय-समय पर बच्चे की ढ़ाल बन जाती थी।

बड़ा कठिन प्रसंग था, पर मैंने हिम्मत न हारी, उनकी हां में हां नहीं मिलायी, प० पू० गुरुजी का आदेश जो था। थोड़ा-सा साहस समेट कर मैंने कहना प्रारम्भ किया, "दत्तोपन्त आपकी तो सुनते नहीं हैं, वे प्रचारक तो निकलेंगे ही, फिर आपके इस रुद्रावतार का क्या लाभ ! उन्हें घर-गृहस्थी-धन में कोई आकर्षण नहीं। वे अब बड़े हो गए हैं विद्वान हैं, क्या अच्छा और क्या बुरा यह समझ सकते हैं और अपने जीवन का ध्येय उन्होंने निश्चित कर रखा है। आप कितना ही विरोध करें वे प्रचारक तो निकलेंगे ही, फिर आप उन्हें आशीर्वाद देकर क्यों नही विदा करते।" मेरे कहने का कुछ असर होने लगा। अब बापूजी का क्रोध कुछ शान्त होने लगा। घण्टा भर काफी प्रश्नोत्तर, चर्चा हुई। अब बापूजी कुछ ठण्डे हुए। तब मैने कहा, "बापूजी ! आप मेरे पिता समान हैं। मेरा यह कहना उद्दन्डता होगी, फिर भी पूछता हूँ, "आप दत्त-भक्त हैं। भगवान दत्त की प्रार्थना करते हैं। आपने ईश्वर से उसके समान बुद्धिमान पुत्र ही मांगा होगा न। भगवान दत्त ने आपकी प्रार्थना सुनी होगी आपका यह बुद्धिमान पुत्र भगवान दत्त का प्रसाद है, अतः आपने उसका नाम भी दत्त रखा और अब इस दत्तात्रेय को चार दीवारों में क्या आप बन्द रखना चाहते हैं ? सतत् संचार करने वाले दत्त क्या कभी ऐसे बन्द रह सकते हैं ? स्वयं की परवाह न करते हुए लोक-सेवा ही उनका कार्य है। कुत्ते, बिल्लियां, गाय, बछड़े, दीन, अनाथ, दुर्बल, अपंग इन सबका वे सहारा बनेंगे। क्या आपको नहीं लगता कि आपके घर में साक्षात् दत्त भगवान ही अवतरित हुए हैं।"

बापूजी गद्-गद् हो उठे। कुछ समय शान्ति रही। मैं जाने के लिए उठा। बापूजी ने पूछा 'कहां जा रहे हो ?' मैंने कहा 'आपके क्रोध से तो बच गया। अब भोजन के लिए डॉ० देशपांडे जी के घर जा रहा हूँ।' बापूजी ने कहा, 'तू ग्यारह बजे यहां देशपांडे जी को साथ लेकर आयेगा।' व अपनी पत्नी से कहा 'आज गांव के सभी लोगों का यही भोजन होगा।' दत्तोपन्त जी की माताजी को अतीव प्रसन्नता हुई। दोपहर को विशेष भोज का प्रबन्ध था। आर्वी की यात्रा सफल करके

मैंने नागपुर आकर प० पू० श्री गुरुजी को वृत्तांत निवेदन किया।

पन्द्रह दिन बाद बापूजी व बाई (उनकी पत्नी) नागपुर पहुँचे। श्री गुरुजी से मिले। बापूजी ने श्री गुरुजी के गले में माला पहनायी। श्रीफल (नारियल) व आहेर (उपहार) दिया व कहा, "मुझे भगवान का साक्षात्कार हुआ। अब मेरा बच्चा आपके स्वाधीन है, वह अब आपका कार्य करेगा। पर एक इच्छा है कि वह घर पर भी आना जाना रखे, जिससे हमें भी संतोष मिले।" श्री गुरुजी हर्ष-विभोर हो गए। बाई व बापूजी की आंखों में भी आनन्दाश्रु थे।

दिनांक 22 मार्च 1942 के दिन श्री दत्तोपन्त जी ठेंगड़ी संघ-प्रचारक बन केरल के लिए रवाना हो गए।

सन् 1948 में संघ प्रतिबन्ध हटाने हेतू जो सत्याग्रह हुए, उनमें आर्वी से एक सत्याग्रही थे, एडवोकेट बापूजी ठेंगड़ी, जिन्हें छः मास का कारावास हुआ था।

× × ×

मजदूर की मांग केवल एक

मैं मनुष्य हूं, मनुष्य के नाते जिन्दा रहने का हमारा हक है।

जिस समय मजदूर अपना मांग-पत्र प्रस्तुत करता है, लोगों को देखने में प्रतीत होता है कि 30 या 40 मांगे हैं। लेकिन वास्तव में देखा जाय तो कुल मिलाकर उसकी केवल एक ही मांग है जो हर एक मनुष्य की है। वह मांग क्या है? वह मांग है ..... मैं मनुष्य हूं और मनुष्य के नाते जिन्दा रहने का मुझे हक चाहिए। इस एक ही बात को वह अलग-अलग ढंग से कहता है। यदि मनुष्य के नाते मुझे जिन्दा रहना है तो कौनसी बातें आवश्यक हैं?

सबसे पहले कुछ न कुछ रोटी का इन्तजाम होना चाहिए। अर्थात् रोटी के लिए हमें काम मिलना चाहिए। इसलिए भारतीय मजदूर संघ ने Right to Work की मांग की है। काम करने का हक मौलिक अधिकार अर्थात् बुनियादी हक होना चाहिए। इस देश में जो पैदा हुआ है, उसको काम मिलना ही चाहिए। उसे काम दिलाना समाज और सरकार का कर्तव्य है। जैसे काम चाहिए वैसे ही काम को सुरक्षा भी चाहिए।

— श्री दत्तोपन्त ठेंगड़ी

संस्मरण

— राज कृष्ण भक्त

पेपर मिल, यमुना नगर में कुछ मांगों को लेकर भारतीय मजदूर संघ से सम्बद्ध यूनियन ने १९६४ में एक मांग-पत्र दिया था। गेट मीटिंग, धरना, प्रदर्शन इत्यादि मांग-पत्र के समर्थन में किये गये, इस प्रकार संघर्ष आगे बढ़ता गया । परन्तु मिल-मालिक ने मांग-पत्र पर ध्यान नहीं दिया तथा पंजाब सरकार ने पूंजीपति का पूरा साथ मजदूरों की माँगों को दबाने में दिया । परिणामतः लगभग 70 मजदूर साथियों का जेल में डाल दिया गया था, इनमें से लगभग 45 कार्यकर्त्ताओं पर 107/151 के अन्तर्गत तथा शेष 25 पर विभिन्न धाराओं के अन्तर्गत अभियोग लगाये गये।

इस स्थिति में हम सबके सम्माननीय श्री दत्तोपन्त जी ठेंगड़ी को, अन्य कोई मार्ग न रहने पर, हस्तक्षेप करना पड़ा तथा उन्होंने यह अभियोग वापिस करवाने के लिए केन्द्र-सरकार से सम्पर्क किया।

तब एक अवसर पर मैं ठेंगड़ी जी के साथ तत्कालीन गृहराज्य मंत्री श्री जयसुख लाल हाथी से मिलने गया । इस अवसर पर श्री ठेंगड़ी जी ने मंत्री महोदय से कहा कि "हिंसा की लेशमात्र घटना न होने के पश्चात् भी अकारण ही पंजाब सरकार ने पूंजीपति के साथ मिलकर हमारे कार्यकर्त्ताओं पर झूठे फौजदारी मुकदमे गढ़ दिये हैं, अतः यह मुकदमे वापिस होने चाहिए।" इस पर श्री हाथी जी ने कहा कि इन्टक के नेता श्री के० आर० मालवीय के मतानुसार पंजाब में हिंसा की घटनाएँ हुई हैं, अतः यह कैसे मान लें कि हिंसा की कोईभी घटना नहीं हुई है? तब मुझे हैरानी में डालते हुए श्री ठेंगड़ी जी ने किसी प्रकार का प्रतिवाद करने के स्थान पर कहा कि 'मालवीय जी के कहने के बाद भला मेरे लिए कहने को क्या रह जाता है?' इस पर श्री हाथी ने मालवीय जी से टेलिफोन पर संपर्क स्थापित किया तथा उन्हें कुछ संदर्भ न देते हुए कल ग्यारह बजे मिलने को कहा। हमें भी उसी समय आने के लिए कहा गया।

जब हम कमरे से बाहर आये तो मेरे कुछ कहने से पूर्व ही मेरी हैरानी को भांपते हुए श्री ठेंगड़ी जी ने कहा कि "चिन्ता मत करो ! मैंने इन्टक में कार्य करते हुए मालवीय जी से अनेक गुर सीखे हैं इस नाते वह मेरे गुरू हैं । उनका मत उनका नहीं हो सकता, कहीं न कहीं कोई भ्रान्ति अवश्य है। हाथीजी को भी मैं भली प्रकार जानता हूं, वह भी गलत नहीं कह सकते। क्या गड़बड़ है स्पष्ट हो जायेगा।" अपने से भिन्न विचार के

व्यक्ति से क्योंकि कुछ सीखा है, अतः उसे गुरू मानकर उसके प्रति यह श्रद्धा-भाव रखना आज के दौर में कहां दिखायी देता है।

अगले दिन जब हाथी जी के कार्यालय पर गये तो वहां अनौपचारिक वार्त्तालाप में हिंसापूर्ण घटनाओं का प्रसंग आया तो मालवीय जी ने कहा कि उनका मत पंजाब इन्टक की रिपोर्ट पर आधारित है उसका कोई अन्य आधार नहीं है। इस सारी बात-चीत को सुनकर हाथी जी ने मुकदमे वापिस लेने की बात मान ली तथा पजाब सरकार को यह मुकदमा वापिस लेने को कहा। अन्ततः सभी कार्यकर्त्ताओं से अभियोग उठा लिये गये।

यह संस्मरण जब-जब स्मृत्ति में उठता है तो सोचता हूं कि दत्तोपन्त जी जैसा अद्-भुत व्यक्तित्व हमारे महान् सांस्कृत्तिक आदर्शों का कितना सटीक प्रतीक है।

कार्यालय नगरपालिका बाराँ (कोटा) राज.

दीपमालिका के शुभ अवसर पर कस्बे के सौन्दर्यवद्धंन में पालिका का सहयोग करें :

1- अपने मकानों व दुकानों का कूड़ा करकट अपने-अपने मकान/दुकान में ही कचरा पात्र रखकर सफाई करने वाले हरिजन कर्मचारी को निर्देश देकर उठवायें या पालिका द्वारा निश्चित स्थान पर ही कूड़ा करकट डालें।

2- बच्चों को सड़कों व नालियों के किनारे टट्टी न बैठने दें।

3- मकानों की मोरियों आदि में पाईप लगायें।

4- बिना स्वीकृति पालिका भवन निर्माण न करें।

5- सरकारी भूमि पर अतिक्रमण न करें।

6- चुंगी कर, गृह कर, अनुज्ञापत्र फीस की चोरी न करके कर समय पर ही पालिका कार्यालय में उपस्थित होकर जमा करायें। कर चोरी कानूनी अपराध है।

7- जन्म-मृत्यु की सूचना पालिका कार्यालय में समय पर ही दर्ज करायें। इससे कई लाभ हैं।

8- राशन कार्ड में फर्जी नाम दर्ज न करायें। फर्जी नाम दर्ज कराना कानूनी अपराध है।

अध्यक्ष
नगर पालिका बाराँ (कोटा) राज०

अधिशासी अधिकारी
नगर पालिका बाराँ (कोटा) राज०

प्रदेश उपाध्यक्ष श्री शम्भूसिंह खिमेसरा
अभिनन्दन पत्र भेंट करते हुए
उदयपुर

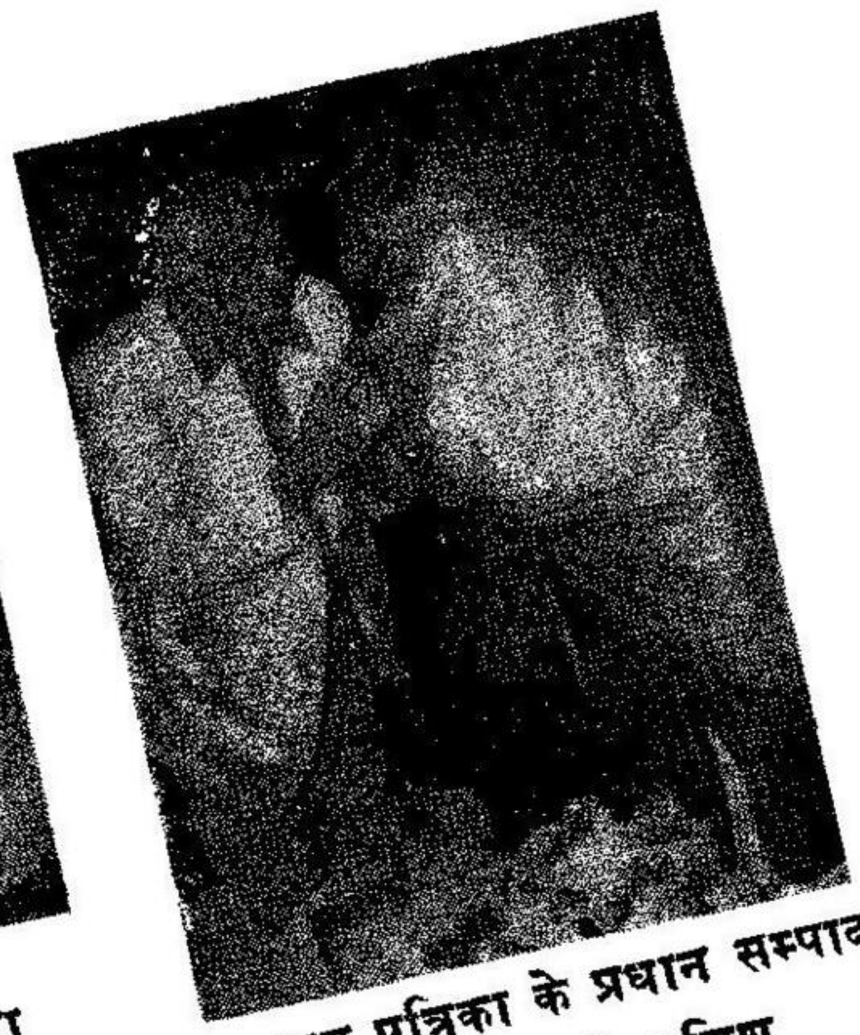

राजस्थान पत्रिका के प्रधान सम्पादक
श्री कपूरचन्दजी कुलिश
द्वारा स्वागत जयपुर

कोटा अभिनन्दन समारोह में
इक्यावन हजार रुपयों का चैक भेंट
करते हुए प्रान्तीय अध्यक्ष

जोधपुर : समारोह के अध्यक्ष
डॉ. वी. वी. जॉन स्वागत करते हुए

मंच : अजमेर अभिनन्दन समारोह

टौंक में श्री हीरालाल निरंकारी द्वारा अभिनन्दन

स्वागत भाषण

माननीय श्री वी० वी० जॉन, अध्यक्ष,

सम्माननीय श्री दत्तोपन्त ठेंगड़ी, समारोह में पधारे विभिन्न प्रतिनिधिगण,

देवियो एवं सज्जनो।

हम आज वीर दुर्गादास की कर्मभूमि राजस्थान की ऐतिहासिक नगरी जोधपुर में श्रमिकों के मसीहा, त्यागी, परोपकारी एवं सत्पुरुष माननीय दत्तोपन्त ठेंगड़ी जी का उनके षष्ठी पूर्ति वर्ष में हार्दिक अभिनन्दन एवं स्वागत करते हैं।

यः परार्थम् उपसर्पति स सत्पुरुषः

एवं

परोपकाराय संतां विभूनयः

अर्थात् परोपकार ही सत्पुरुषों की शोभा है और इसी के अनुरूप श्री ठेंगड़ी जी ने जीवन पर्यन्त परमार्थ में लगे रहने का व्रत ले रखा है। वे समाज व राष्ट्र की एक महान् विभूति हैं। भारत एक कृषि प्रधान देश हैं और वर्षों की परतन्त्रता ने हमारे देश की 80 प्रतिशत श्रमजीवी जनता को उस स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया जिस स्थिति में यह बहुत बड़ा वर्ग अपने दो समय की रोटी जुटाने में भी असमर्थ हो गया।

रूस में औद्योगिक क्रान्ति के बाद सम्पूर्ण विश्व में मजदूर, भूमिहर, खेतीहर, कृषक वर्ग में जागृति आने लगी और उत्थान हेतु शुरु हुए। इसके विकास क्रम में समाजवादी व साम्यवादी दर्शन सामने आए। विश्व के आर्थिक रंगमंच पर यह वाद नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के अभाव में इस प्रकार के आन्दोलन को एक नवीन तानाशाही अथवा वर्ग संघर्ष व शासकीय साम्राज्यवादी स्वरूप ही प्रदान कर सके। हमारे देश में रोटी के साथ राम और भूमि के साथ गोपाल जुड़े हुए हैं ऐसी दशा में विचित्र स्थिति पैदा हो गई और हमारी संस्कृति से मेल न खाने के कारण यहां के इस वर्ग की आशाओं का केन्द्र भारत के बाहर स्थापित होने लगा। उन आस्थाओं के फलस्वरूप राष्ट्रीयता के स्थान पर राष्ट्रद्रोह के अंकुर पनपने लगे। ऐसी स्थिति में साधु प्रकृति के श्री ठेंगड़ी जी ने सभी प्रकार की बाधाओं का सामना करते हुए मजदूर आन्दोलन को धर्म व नैतिकता

से परिपूर्ण भारतीय स्वरुप प्रदान किया। श्रमिक आन्दोलन को व्यक्तिगत प्रभाव, राष्ट्रीयकरण व समाजवाद की शासकीय तानाशाही से मुक्त कर राष्ट्रीय भावों एवं राष्ट्रीय प्रेरणाओं से आच्छादित किया। उसे भारतीय दृष्टिकोण प्रदान किया। इस प्रकार इन्होंने महाकवि तुलसीदास के कथन—

तुलसी सन्त सुअम्ब तरु, फूल फलहिं पर हेतु।
इतते वे पाहन हनें, उतते वे फल देत॥

को चरितार्थ किया है। इस सत्पुरुष ने सभी चोटों को सहन करते हुए चोटकर्ताओं को भी शुभफल ही प्रदान किया है। दुष्ट प्रकृति के लोगों ने बिच्छु की तरह अपने रक्षक को डंक मारना नहीं छोड़ा तो श्री ठेंगड़ी जी न डंक सहन करते हुए भी अपने सत् कार्य का व्रत नहीं तोड़ा।

भृतहरि का कथन है—

ऐते सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थान्परित्यज्य येः

अर्थात् सत्पुरुष अपना स्वार्थ तज कर परोपकार में रत रहते हैं। इसी के अनुरुप श्री ठेंगड़ी जी ने परिवार को जीवन हेतु आवश्यक समझते हुए भी केवल मजदूर हितार्थ जीवन समर्पित कर, आजीवन अपने को परिवारिक सीमाओं से दूर कर लिया। उन्होंने मजदूर वर्ग को ही अपना परिवार मान रखा है।

आपके द्वारा प्रतिपादित-उद्योगों का श्रमिकीकरण, श्रमिकों का राष्ट्रीयकरण, एवं राष्ट्र का औद्योगीकरण विचार, विश्वकर्मा दिवस को श्रमिक-दिवस को मान्यता एवं कार्य क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व को स्थान की मांग, भारतीय मजदूर आन्दोलन को ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व को एक नवीन वैचारिक देन है। हमारे देश में भारतीय मजदूर संघ व भारतीय किसान संघ आपको सेवाओं के ही प्रतिफल हैं और राष्ट्रीय स्तर पर यह विशालतम दूसरा संगठन है।

आपके विचारों को सम्पूर्ण विश्व में सम्मान प्राप्त है। आपने श्रमिक-सम्बन्धों के सम्मेलनों में भाग लेने हेतु अनेक विदेश यात्राएं की हैं, अनेक प्रकार का विश्व बोधक साहित्य सृजन किया है। अंग्रेजी के अतिरिक्त आप हिन्दी, मराठी, बगला, असमिया, मलयालम आदि भाषाओं पर भी पूर्ण अधिकार रखते हैं। सम्पर्ण देश की अनेक संस्थाओं से आप जुड़े हुए हैं।

मैं भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक, महामंत्री श्री दत्तोपन्त ठेंगड़ी जी की षष्ठी-पूर्ति सत्कार समिति, नगर के नागरिकों एवं शोषित-पाड़ित श्रमजीवियों की ओर से हार्दिक अभिनन्दन करता हूं। इस आजीवन सेवार्थी पुरुष का स्वागत करते हुए जोधपुर नगर अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करता है।

माननीय प्रो० वी० वी० जोन से पूरा जोधपुर नगर परिचित है। श्री जोन को जोधपुर संभाग से अतुल घनिष्ठता है । आप विश्व ख्याति प्राप्त शिक्षाविद के रूप में पहिचाने जाते हैं। उनकी आज के इस समारोह की अध्यक्षता बहुत ही सामयिक है। हम उनके आभारी हैं । मैं षष्ठी-पूर्ति सत्कार समारोह समिति एवं भारतीय मजदूर संघ जोधपुर संभाग की ओर से उनका हार्दिक स्वागत करता हूं।

समारोह की शोभा बढ़ाने हेतु प्रान्त एवं बाहर से पधारे माननीय प्रतिनिधि-गणों एवं अतिथियों का भी मैं षष्ठी-पूर्ति सत्कार समिति की ओर से हार्दिक स्वागत करता हूं ।

माननीय नागरिक बन्धुओं, देवियों एवं सज्जनों आपने अपना अमूल्य समय देकर इस समारोह की शोभा बढ़ाई है मैं आप सबका भी समारोह समिति की ओर से हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन करता हुआ हार्दिक आभार प्रगट करता हूं।

बंशीलाल माहेश्वरी एडवोकेट

स्वागताध्यक्ष

षष्ठी पूर्ति सत्कार समारोह समिति,

जोधपुर।

जोधपुर,

दिनांक २०-१२-१९८१

आधुनिक साम्यवाद का सिद्धान्त है कि धन सम्पत्ति का समान वितरण होना चाहिए किसी को भी अपनी आवश्यकता से अधिक रखने का अधिकार नहीं । यह सिद्धान्त भारतीय परम्परा के लिए नया नहीं। भागवत पुराण कहता है—

यावत भ्रियते जठरं तावत् स्वत्व हि देहिनाम ।
अधिकं यो अभिमन्येत सस्तेनो दंडमर्हति ॥

जितना पेट भरने के लिए आवश्यक हो उतना ही शरीरधारियों का स्वत्व अर्थात् अपना होता है। इससे अधिक का जो अभिमान करता है, वह चोर है और दण्ड के योग्य है ।

अन्तर | नेता और संगठनकर्त्ता में

उन दिनों मा० ठेंगड़ी जी राज्य सभा सदस्य तथा ५७-साउथ एवेन्यू में रहा करते थे। ऊपर की मंजिल याने ५८-साउथ एवेन्यू में प्रख्यात साम्यवादी नेता श्री जेड० ए० अहमद का निवास था। मा० ठेंगड़ी जी एवं एहमद साहिब में काफी घनिष्ठता तथा गहरी मित्रता थी जिसे देखकर कभी-कभी आश्चय होता था कि आखिर दो परस्पर विरोधी विचारधारा वाले नेताओं में इतनी घनिष्ठता का आधार क्या है ?

यही प्रश्न जब ठेंगड़ी जी से पूछा गया तो उन्होंने बताया कि यह सही है कि हम लोगों के आचार विचार, संगठन, जीवन दर्शन, सामाजिक नैतिक मूल्य आदि भिन्न हैं किन्तु अहमद साहिब नेता नहीं बल्कि साम्यवादी दल के भारत में संगठनकर्त्ता हैं और संगठनकर्त्ता का अन्तिम सीमा तक यही प्रयास रहता है कि एक भी व्यक्ति को नाराज न किया जाए। क्या जाने कब कौन कहां किस प्रकार से संगठन के लिए लाभदायी सिद्ध हो। अपने संगठन का चूंकि मैं भी संगठनकर्त्ता ही हूं अतः यही हमारी मित्रता का आधार है।

नेता और संगठनकर्त्ता में क्या फर्क होता है यह उस दिन स्पष्ट हो गया।

आत्मीयता एवं करुणा
की
प्रतिमूर्ति

भारत पाक युद्ध 1971 के पश्चात् मा० ठेंगड़ी जी का पंजाब प्रवास चल रहा था। पठानकोट पहुँचने पर स्वाभाविक ही अन्य कार्यक्रमों के अलावा युद्ध में घायल हुए सैनिक जवानों से मिलने सैनिक अस्पताल जाने का कार्यक्रम भी रखा गया।

अस्पताल घायल जवानों से भरा पड़ा था। प्रत्येक वार्ड में दिल हिला देने वाले दृश्य उपस्थित थे। कहीं किसी सैनिक को रक्त दिया जा रहा था, तो कहीं आक्सीजन। कोई पीड़ा से कराह रहा था, तो कोई अचेतावस्था में पड़ा था। जीवन मृत्यु के इस

संघर्ष में डाक्टर व नर्सें प्राणपन से जवान की जीवन-रक्षा हेतु जुटे थे।

घायलों से मिलते, हालचाल पूछते, उन्हें धैर्य बँधाते ठेंगड़ी जी आगे बढ़ते जाते थे, कि तभी एक बीस वर्षीय युवा सैनिक, जिसका शरीर गोलियों से छलनी हो चुका था, उसके निकट श्री ठेंगड़ी जी रुक गए। पूछने पर उसने बताया कि 'वह केरल निवासी है, घर में माँ अकेली है।' यह बताते हुए उस सैनिक की आँखों से आँसू बह निकले। ठेंगड़ी जी मलयाली भाषा में कितनी ही देर उसे ढाढस बंधाते रहे और उसके सिर और माथे पर हाथ फेरते रहे। उस समय का दृश्य मानो एक पिता अपने हृदय का समूचा वात्सल्य उडेलकर अपने बेटे की प्राणरक्षा हेतु भगवान से याचना कर रहा है। गहरी संवेदना, पीड़ा और विवशता का वह क्षण श्री ठेंगड़ी जी के व्यथित अन्तःकरण में समा गया था।

—अमरनाथ डोगरा
उप प्रधान
भारतीय प्रति रक्षा मजदूर संघ

नगरपालिका मण्डल सिरोही की ओर से नगरवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

नगरपालिका आपसे अनुरोध करती है कि –

1- सड़क पर कचरा इधर उधर फेंक कर गन्दगी नहीं फैलावें, कचरा निर्धारित स्थानों पर ही डालें, ठेले वाले विक्रेता अपने पास एक कचरा पात्र के रूप में खुला पीपा रखें।
2- बच्चो को शौच हेतु नाली या सड़क पर न बैठावें।
3- सरकारी भूमि पर किसी प्रकार का अतिक्रमण नहीं करें एवं जो भी अतिक्रमण हो उसे तुरन्त हटा दें एवं निर्माण कार्य हेतु नियमानुसार पालिका से स्वीकृति प्राप्त कर ही निर्माण कार्य करावें।
4- नागरिकों से निवेदन है कि भवन निर्माण की समाप्ति पर लगे हुए मलबे को तुरन्त हटाने की व्यवस्था करें।
5- कृपया जानवरों को खुला आवारा घूमने के लिये नहीं छोडें व आवारा कुत्तों को पकडने में सहयोग करें।
6- दान के रूप में आवारा जानवरों के लिए घास सडक पर डालकर आवागमन में बाधा उत्पन्न न करें एवं गन्दगी न फैलावें ऐसा घास नगरपालिका के कायन हाउस में ही भेजें।
7- जनहित में जन्म मरण की सूचना नगरपालिका में देवें।

केदारनाथ गोयल
अधिशासी अधिकारी

तारा भण्डारी
अध्यक्ष

बीकानेर (बांए) श्री सच्चिदानन्द मिश्र एडवोकेट स्वागताध्यक्ष
(दांए) श्री बहादुरसिंहजी (समारोह के अध्यक्ष)

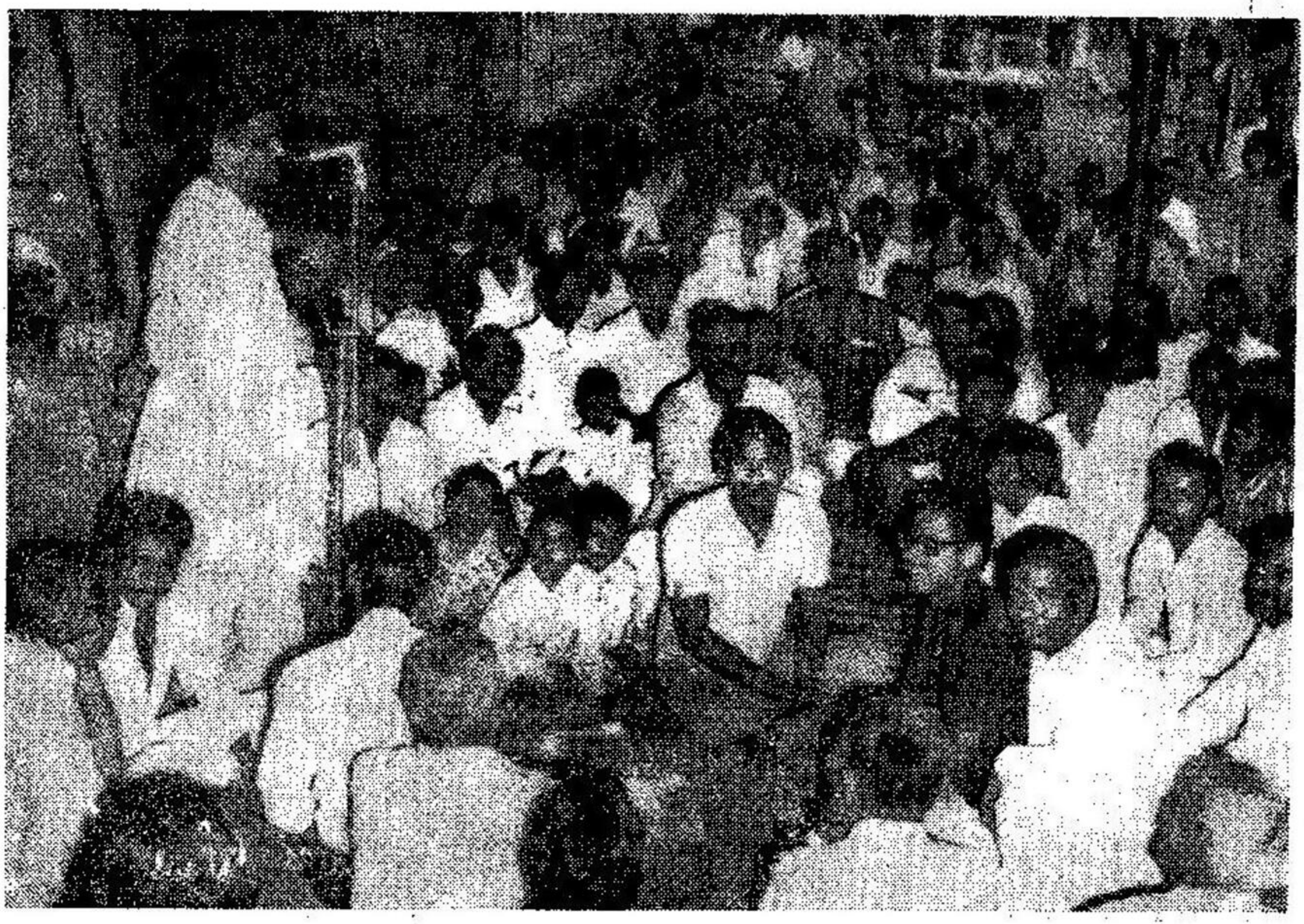

श्री कृष्णचन्द्र चतुर्वेदी प्रान्तीय अध्यक्ष
कोटा में मंहगाई विरोधी धरने को सम्बोधित करते हुए

अभिनन्दन समारोह मंच पर मा. ठेंगड़ीजी

भारत-पाक के युद्ध दिनों में श्रीमान् दत्तोपंत ठेंगड़ी संसद सदस्य एवं महामंत्री अखिल भारतीय मजदूर संघ प्रतिरक्षा कर्मचारियों के सम्मेलन को सम्बोधित करने पठानकोट आए तो घायल जवानों को देखने सैनिक अस्पताल भी गए यह चित्र उसी अवसर का है। ठेंगड़ीजी ने जवानों को मजदूरों की ओर से बहुत से उपहार भेंट में दिए।

षष्ठीपूर्ति समारोहों पर मा० ठेंगड़ीजी का मार्ग-दर्शन

"देशाभिमान युक्त लोकतन्त्र"

प्रेम यह मैग्नीफाईंग ग्लास

आज के इस अवसर पर क्या बोलना चाहिए, क्या नहीं बोलना चाहिए, यह मैं तय नहीं कर पा रहा हूं। हमेशा सभायें होती हैं, हम भाषण भी देते हैं किन्तु आज का अवसर कुछ दूसरे ढंग का है, जिसमें आप लोग मेरा सत्कार कर रहे हैं। ऐसे सत्कार सभा में क्या बोलना चाहिए, इसका मुझे पता नहीं। क्योंकि जिस अखाड़े से मैं आया हूं उस अखाड़े में कोई किसी का सत्कार करता हो नहीं, सभी लोग कार्य करते जा रहे हैं–२० साल, ४० साल, ५० साल-लेकिन कोई किसी का सत्कार नहीं करता। इसके कारण ऐसे अवसर पर किस ढंग से बोलना चाहिए–इस असमंजस में मैं हूं। दूसरी बात –मेरे विषय में कुछ अच्छे शब्द कहे गए हैं। यह तो हमारे साथियों का प्रेम है। प्रेम यह मेग्नी-फाइंग (बढ़ाकर बताने वाला) ग्लास के समान होता है। मेग्नीफाइंग ग्लास में छोटी चीज बहुत बड़ी दिखाई देती है। वैसे ही प्रेम के कारण मेरे सहकारियों को मेरा छोटा काम भी बहुत बड़ा मालुम होता है। भारतीय मजदूर संघ आज एक विशाल स्वरूप धारण कर चुका है यह बात ठीक है, लेकिन यह मेरे कारण है यह कहना केवल अतिशयोक्ति ही नहीं तो यह गलत होगा। मैं कई नेताओं से, सार्वजनिक जीवन में यह शिकायत सुनते रहता हूं कि जनता कृतघ्न है–हम देश के लिए कितने बर्बाद हुए हैं लेकिन जनता ने उसका कुछ भी महत्व नहीं माना–ऐसी शिकायत मैं सुनते रहता हूं। लेकिन मेरे विषय में कुछ उल्टा मामला ही मालूम होता है। मेरी जन्म-पत्री में शनि व मंगल ऐसे स्थान पर बैठे हैं कि काम तो मेरे सहकारी करते रहते हैं और काम में यदि यश प्राप्त हुआ तो श्रेय वे मेरी ओर खिसका देते हैं। काम में यदि असफलता हुई तो उसका अपयश वे स्वयं लेते हैं। इसके कारण जो मेरा बैंक एकाउन्ट देखता है उसको केवल श्रेय ही श्रेय दिखाई देता है, लेकिन यह हमारे द्वारा जमा किया हुआ श्रेय नहीं है। हमारे साथियों द्वारा जमा किया हुआ यश है। लेकिन इसके कारण एक आभास होता है कि मैंने कुछ बहुत बड़ा काम किया है।

यह व्यक्ति का नहीं-सिद्धान्त का सम्मान है

वैसे अपने देश में यह एक पद्धति है कि प्रेम के कारण किसी को भी अति श्रेष्ठ बताना, जो वास्तव में वास्तविकता से दूर है। एक छोटा-सा प्रसंग याद आता है—पूज्य महात्मा जी गुरुदेव के निमंत्रण पर शांति निकेतन कुछ दिन के लिए गए थे। तो एक विदेशी पत्रकार ने कुछ प्रश्न दोनों को अलग-अलग पूछे। उनमें से एक प्रश्न यह था कि आज का सर्वश्रेष्ठ कवि कौन है? पहले महात्मा जी से पूछा। महात्मा जी ने जवाब दिया—'मैं और किसी को नहीं जानता—गुरुदेव के अतिरिक्त। यानि सबसे श्रेष्ठ कवि गुरुदेव हैं। वही प्रश्न गुरुदेव से पूछा। उन्होंने जो उत्तर दिया वह ध्यान में रखने लायक है। उन्होंने कहा कि निसर्ग को सर्वश्रेष्ठ मान्य नहीं है—कोई श्रेष्ठ हो सकता है किन्तु सर्व-श्रेष्ठ नहीं। तो प्रेम के कारण, एक पद्धति के कारण अपने प्रिय व्यक्ति के बारे में बहुत कुछ कहा जाता है लेकिन उसमें सचाई कितनी है—यह भी ध्यान में रखना चाहिये।

हम ही किसी पत्थर को सिन्दूर लगा देते हैं, फिर कहते हैं कि यह हनुमान जी हैं और उनके सामने हम ही प्रणाम करते हैं। ऐसा ही कार्यकर्त्ताओं द्वारा कुछ इस अवसर पर हो रहा है, ऐसा मुझे लगता है। यह जो सारा उपक्रम हुआ है इसमें कई लोगों ने सह-योग दिया। भारतीय मजदूर संघ के कार्य-कर्त्ताओं ने तो काम किया ही है, उसके अलावा भी जिनका मजदूर क्षेत्र से सीधा सम्बन्ध नहीं लेकिन जिनके मन में यह विश्वास है कि भारतीय मजदूर संघ केवल ट्रेड यूनियन नहीं है तो राष्ट्र निर्माण के प्रमुख माध्यमों में से एक माध्यम यह भारतीय मजदूर संघ है, ऐसा विश्वास जिनके मन में है ऐसे देशभक्त नागरिक बन्धुओं ने भी इसमें सहयोग दिया है। मैं हृदयपूर्वक आप सब बन्धुओं का धन्यवाद करता हूं—आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूं। यह व्यक्ति का सम्मान नहीं है तो एक संगठन और एक सिद्धांत—एक आदर्श—इसके प्रतिनिधि के रूप में हो यह सम्मान हो रहा है। अतः सभी बन्धुओं का जिन्होंने इस कार्य में 'पत्रम् पुष्पम् फलम् तायम्' सहयोग दिया है—सभी के प्रति अपनी ओर से और अपने संगठन की ओर से कृतज्ञता प्रकट करता हूं।

श्रमिक जगत पर कुठराघात

वैसे देखा जाए तो सत्कार समारोह यह आनन्द का ही विषय होना चाहिए। लेकिन जो परिस्थितियां आज देश में और मजदूर क्षेत्र में हैं, उनको देखते हुए किसी को भी आनन्द होना, बड़ा कठिन काम है। देश की भी स्थिति, मजदूरों की भी स्थिति आज बहुत ही शोचनीय है। जहाँ तक मजदूर क्षेत्र का सम्बन्ध है हम सब लोग जानते हैं कि इस समय सरकार ने एक बहुत बड़ा हमला मजदूर आंदोलन पर किया हुआ है। अभी-अभी जो आवश्यक सेवा अनुरक्षण कानून पास हुआ, वह मजदूरों के हड़ताल के अधिकार को छीनने वाला है और इस तरह एक कुठाराघात मजदूर आंदोलन पर सरकार ने किया है। इतना बड़ा आघात करने की आवश्यकता क्या थी, इसका विचार आप सबने किया तो आपको आश्चर्य होगा कि पिछले दो साल में कोई भी ऐसी अभूतपूर्व अनोखी घटना नहीं हुई थी कि जिसके कारण यह अभूतपूर्व अनोखा कदम उठाने की आवश्यकता किसी भी समझदार सरकार को प्रतीत हो।

पिछले दो साल में उत्पादन की मात्रा वही रही जो हमेशा रहती थी । नष्ट हुए श्रम-दिनों की संख्या में कोई वृद्धि नहीं थी, हड़तालों की संख्या उतनी ही थी जितनी हमेशा रहती है, कोई भी अनोखी बात नहीं हुई थी कि जिसके कारण यह हमला करना उचित था तो भी यह हमला हुआ है । इस तरह का हमला करने की हिम्मत सरकार को क्यों हुई– इसका गम्भीरता से सभी लोगों ने विचार करना आवश्यक है ।

सरकारी कुप्रचार

पहली बात यह ख्याल में आती है कि पिछले ३४ साल में सरकार ने मजदूरों के विषय में तरह-तरह की गलतफहमियाँ फैलाने का कार्य जारी रखा है । डा० गौबेल्स का सिद्धांत था कि कोई भी झूठ बात आप एक सौ बार दोहराइये – तो बार-बार कहने के कारण सुनने वाले को यह लगेगा कि यह सच्चाई है । भारत सरकार ने इसी का प्रयोग किया है । और इसके कारण मजदूरों के बारे में प्रेम रखने वाले लोग भी मजदूर आंदोलनों के विषय में काफी गलतफहमी रखते हैं । गलत प्रचार तो तरह-तरह का है किन्तु केवल १-२ उदाहरण मैं आपको दूंगा। जैसे आमतौर पर, कहा जाता है कि भाई मजदूर गैर-जिम्मेवार है । वास्तव में उसी समय सरकार यह भी कहती है कि इस वर्ष उत्पादन में वृद्धि हुई । अरे ! मजदूर अगर गैरजिम्मेवार है तो उत्पादन में वृद्धि कैसे होगी ? दो परस्पर विरोधी वक्तव्य सरकार के लोग एक ही समय में करते रहते हैं । फिर भी लोगों मे एक बात फैल गई है कि मजदूर गैर जिम्मेवार है ।

वायुमण्डल का सम्पूर्ण समाज पर स्वाभाविक परिणाम

कभी-कभी बात करने का मौका आता है, किसी ने कहा कि तुम्हारे मजदूर बड़े गैरजिम्मेवार हैं । हमने प्रति प्रश्न किया कि हमारे देश में ऐसे और कितने हैं जो लोग गैर जिम्मेवार नही हैं इसकी सूची दीजिये । वास्तव में मजदूर क्षेत्र—यह समाज से कटा हुआ क्षेत्र नही है । सम्पूर्ण समाज में जो वायु मण्डल होगा उसका स्वाभाविक परिणाम मजदूर क्षेत्र पर भी होता है, जैसे विद्यार्थी क्षेत्र पर भी होता हैं, हर क्षेत्र पर होता है । सम्पूर्ण समाज में वायुमण्डल यदि स्वार्थ का, गैर जिम्मेवारी का, राष्ट्रभक्ति-विहीनता का होगा तो केवल एक किसी क्षेत्र में – यह चाहे मजदूर क्षेत्र हो क्यों न हो, दूसरा वायुमण्डल मिलना चाहिए ऐसी अपेक्षा रखना एक अवास्तविक बात है । आज समाज का वायु-मण्डल क्या है यह देखना चाहिये । किसी भी समाज में जो मनावैज्ञानिक वायुमण्डल बनता है, उसमें पहल करने का काम हमेशा नेताओं का हुआ करता है क्योंकि नेताओं का जैसा व्यवहार रहेगा उसी का अनुकरण बाकी लोग करते हैं ।

आज जिनको देश के शीर्षस्थ नेता माना गया है, वे लोग इस देश के सर्वोच्च मंच पर—पार्लियामेंट में—एक दूसरे को गाली गलौज कर रहे हैं, एक दूसरे पर उछल रहे—जो ज्यादा प्रगतिशील व क्रान्तिकारी हैं वे एक दूसरे पर जूते भी निकाल रहे हैं—यह समाचार अगर हमारे मजदूर व विद्यार्थी हर दिन समाचार पत्र में पढ़ते हैं—और फिर उनसे यह अपेक्षा की जाये कि नेता तो अनु-शासन विहीन रहें और बाकी लोगों को अनु-

शासन का पालन करना चाहिये – तो यह गलत बात होगी।

गैर जिम्मेवार वायुमण्डल के लिये नेता दोषी हैं

यह ठीक है कि हम राष्ट्रभक्त हैं हम उत्पादन में बाधा लाना नही चाहते, अनुशासन से रहना चाहिए ऐसी हमारी इच्छा है। जिम्मेवारी की भावना का प्रचार हम पूरी ताकत के साथ कर रहे हैं–लेकिन उसको सीमित यश प्राप्त होता है क्योंकि समाज में फैला हुआ अनुशासनहीनता का व गैर जिम्मेवारी का वायुमण्डल है, जिसके लिए वास्तव में जिम्मेवार नेता हैं। इसके लिये यदि कोई उपाय-योजना होगी वह यही हो सकती है कि आज जिनको समाज के नेता-माना जाता है कि उनका व्यवहार आदर्श रहना चाहिये या जिनका व्यवहार आदर्श है ऐसे लोगों को नेता मानने की आदत समाज को लगनी चाहिए। दोनों में से एक बात जब तक नहीं होती तब तक यह वायुमण्डल दुरस्त नहीं हो सकता। इतना खराब वायुमण्डल होते हुए भी हिन्दुस्तान का मजदूर उत्पादन बढ़ा रहा है, काम बराबर कर रहा है, और इतना ही नहीं तो जब कभी देश पर संकट आता है— १९६२ में चीन के आक्रमण के समय, ६५ में पाकिस्तान के आक्रमण के समय, ७१ में बंगलादेश की लड़ाई के समय, मजदूरों ने ज्यादा घण्टों काम किया है। अतिरिक्त भत्ता न लेते हुए, स्वयं गरीब रहते हुए सुरक्षा कोष में पैसा दिया। स्वयं दुबले-पतले रहते हुए ब्लडबैंक में अपना खून जमा किया है. जवान के नाते लड़ने के लिए अपने नाम दिए हैं, और इतना ही नहीं तो हम गौरव के साथ कह सकते हैं कि १९६५ की लड़ाई के समय, हमारे कुछ कार्यकर्त्ताओं ने, पाकिस्तान की सीमा पर अपनी युद्ध-सामग्री बचाने के लिए, हमारे कुछ रेल कर्मचारी बन्धुओं ने अपनी जान भी कुर्बान की है। यह सारा होते हुए भी आज आम आदमी के दिमाग में यह बात बैठी है कि सबसे ज्यादा गैर जिम्मेवार मजदूर हैं तो इसका कारण एक ही है कि सरकार की ओर से लगातार यह प्रचार हो रहा है। इस तरह के गलत प्रचार के प्रतिवाद करने का काम, आम जनता को विश्वास में लेकर मजदूरों की बात उनको समझाने का काम भारतीय मजदूर संघ के पूर्व काम करने वाले किसी भी यूनियन ने नहीं किया, इसी के कारण यह सारा गलत प्रचार बड़ा प्रभावी हुआ है।

उत्पादन की कमी के अनेक कारण

दूसरा उदाहरण आपके सामने देता हूं। सरकार ने निरंतर यह प्रचार किया कि उत्पादन में जो कुछ भी कमी होती है उसका प्रमुख कारण मजदूरों की हड़तालें हैं और दूसरा प्रचार किया कि मजदूरों का पैसा बढ़ने के कारण, मंहगाई बढ़ती है। भारतीय मजदूर संघ ने इन दोनों बातों के विषय में प्रारम्भ से जनता को सुशिक्षित करने का प्रयास किया था कि यह दोनों आरोप गलत हैं। आज सौभाग्य से एक निष्पक्ष संस्था जिसका नाम है Indian Institue of Public Administration जिसने पिछले जुलाई-अगस्त महिने में, इन्हीं दोनों विषयों अध्ययन व सर्वेक्षण किया और उन्होंने अपने निष्पक्ष निष्कर्ष प्रकाशित किये हैं। हमारे लिए यह आनन्द का विषय है कि भारतीय मजदूर संघ ने प्रारम्भ से जो प्रतिपादन किया था वह और इंडियन इंस्टीट्यूट आफ पब्लिक

एडमिनिस्ट्रेशन के निष्कर्ष दोनों ही एक जैसे हैं। इंस्टीट्यूट ने स्पष्ट कहा है कि उत्पादन में जो घट होती है उसके लिए मजदूरों की हड़तालें तो एक नगण्य कारण है, वास्तव में उत्पादन में घट आने के और भी बड़े कारण हैं। वे कारण उन्होने बताये कि अव्यवस्था, कच्चा माल समय पर न मिलना, मशीनरीका खराब हो जाना, बिजली की कमी व उसको रुकावट, बाजार की गलत पालिसी रहना, निर्यात की सुविधायें उपलब्ध न होना—यह बड़े कारण हैं।

मंहगाई बढ़ने के तीन कारण

मंहगाई बढ़ने के तीन प्रमुख कारण उन्होंने स्पष्ट रूप से कहे एक घाटे की अर्थ-व्यवस्था, दूसरा काला पैसा और तीसरा अनियंत्रित लाभांश और ब्याज। हम सब लोग जानते हैं कि घाटे को अर्थव्यवस्था सरकार के हाथ में है और डिफीसिट फाइ-नेनसिंग की मात्रा निरंतर बढ़ाने का काम स्वय सरकार करती है। जो काला पैसा कमाते हैं उनको नजदीक के खम्बे पर फांसी दी जायगी ऐसा स्व० जवाहरलालजी ने कहा था लेकिन अभी पिछले साल काला पैसा कमाने वाले को सरकार ने अच्छे चरित्र का प्रमाण पत्र दिया है। धारक बांड स्कीम निकालकर उनको कहा है कि और काला पैसा कमाओ हमें कोई आपत्ति नहीं आप काला पैसा कमाते जाइये उसको सफेद करने का काम भारत सरकार करती रहेगी; इस तरह का आश्वासन उनको दियाहै उनको पीठ थपथपाई है। लाभांश व ब्याज का नियंत्रण करने की हिम्मत भारत सरकार की नहीं है, यह बात तो साफ है। याने जो प्रमुख कारण मंहगाई बढ़ने के लिये हैं, उनके लिए जिम्मे-वार स्वयं सरकार है लेकिन बलि का बकरा मजदूरों को बनाया जाता है। हालांकि इंस्टीट्यूट के निष्कर्ष के अनुसार मजदूरों का बढ़ा हुआ पैसा जिसका बहुत थोड़ा असर नगण्य प्रभाव मंहगाई पर होता है।

एक गलतफहमी

सरकार के गलत प्रचार के कारण, अखंड प्रचार के कारण सुशिक्षित लोगों के मन में भी, ये दोनों गलतफहमियाँ जमकर बैठ गयी हैं। इसका परिणाम क्या होगा? ट्रेड यूनियन आंदोलन ने जिस तरह समाज से सम्पर्क रखना चाहिए था उस तरह नहीं रखा इसके कारण, जब कभी सरकार के साथ संघर्ष होता है, मजदूरों की बात आम जनता के ख्याल में नहीं आती। वास्तव में दृश्य तो ऐसा उपस्थित होना चाहिए, कि मजदूर और आम जनता एक तरफ, अकेली सरकार एक तरफ। किन्तु ऐसा दृश्य निर्माण होता है कि मजदूर अकेला एक तरफ, और आम जनता सरकार के साथ खड़ी है। मजदूर अकेला पड़ता है सरकार अकेली नहीं पड़ती। आम जनता को विश्वास में, लेकर खुद से अपनी बात समझाने का काम भारतीय मजदूर संघ के पूर्व यूनियनों ने नहीं किया इसके कारण सरकार का हौंसला बढ़ गया है। दूसरी बात जिस देश में मजदूर एकता कायम हुई है, वहाँ मजदूरों की ताकत इतनी बढ़ जाती है कि सरकार को भी उनके कहने के अनुसार विचार करना पड़ता हैं। उनका प्रभाव रहता हैं। पोलिटिकल यूनियनइज्म के कारण, एक-एक कारखाने में, एक-एक उद्योग में चार-चार पांच-पांच मजदूर संघ खड़ी हो जाती है। आज भी हमारे देश में, हर जगह चार, पांच, छै यूनियनें खड़ी हम देखते हैं इसका कारण यही है, पोलिटिकल यूनियनइज्म। यदि राजनैतिक मजदूर संघों के सिद्धांत को

स्वीकार किया, तो हर एक कारखाने में, उतनी यूनियनें बनने की गुंजाइश हो जायेगी जितनी राजनैतिक पार्टियां हिन्दुस्तान में हैं। इससे मजदूर बँट जाता है उसकी सामूहिक सौदे की ताकत और सघर्ष करने को शक्ति घट जाती है। इसका लाभ सरकार उठा सकती है।

गैर राजनीतिक आधार पर मजदूर संगठन आवश्यक

दुनिया का अनुभव यदि हम देखें, कई देशों में राजनैतिक मजदूर संघवाद चल रहा है। यह सिद्धांत कम्युनिस्टों का है, लेकिन बाकी लोगों ने भी उनका अंधानुकरण किया है। पश्चिम में जैसे इटली, फ्रांस, जर्मनी में पौलीटिकल यूनियनइज्म के कारण मजदूर बँट गया और इसके कारण वहां, मजदूरों की वास्तव में जितनी शक्ति है उसका सरकार पर प्रभाव नहीं है। इसके उल्टे जिस देश को पूंजीवाद का अड्डा माना गया है, जहां कैपिटलिस्टों की ताकत बहुत ज्यादा है, वहां ऐसा नहीं है। अमेरिका में भारतीय मजदूर संघ के ही समान गैर राजनैतिक विशुद्ध मजदूर यूनियन के आधार पर मजदूरों के संगठन खड़े हैं। इसके कारण एक उद्योग में एक ही यूनियन है। यह बात ठीक है कि हर एक मजदूर जैसे मजदूर है, वैसे नागरिक भी है और नागरिक के नाते किसी भी पार्टी में काम करना या न करना उसका अधिकार है। लेकिन जहां तक यूनियन का सवाल है, उसे राजनीति में न लाया जाये। अलग-अलग राजनैतिक दलों में होते हुए भी, सभी मजदूर अपने हित के लिए एक यूनियन मंच पर काम करते हैं। इस तरह की यनियन अमेरिका में हैं और इसके कारण हरेक उद्योग में एक ही यूनियन है और अपनी एक-एक यूनियन को लेकर अमेरिकन फेडरेशन आफ लेबर बना है। अपनी एकता के कारण जो देश वास्तव में पूंजीवाद का गढ़ माना जाता हैं, उस अमेरिका में, मजदूरों की ताकत इतनी बढ़ी हुई है कि अमेरिका के राष्ट्रपति को भी, जिसको बहुत ज्यादा शक्तियां हुआ करती हैं, कोई भी नीति तय करते समय, केवल औद्योगिक और मजदूरों की नीति ही नहीं तो विदेश नीति तय करते समय भी, दस बार सोचना पड़ता है कि इस नीति के बारे अमेरिका के मजदूरों की प्रतिक्रिया क्या होगी? इसका प्रभाव विशुद्ध ट्रेड यूनियनइज्म के कारण पूंजीवाद के अड्डे में मजदूरों ने निर्माण की है।

जैसे पूंजीवादी देश का मैंने उदाहरण दिया हम साम्यवादी देशों का भी विचार करें। राजनैतिक यूनियनइज्म कम्युनिस्टों का ही सिद्धान्त है। लेकिन जहां-जहां कम्युनिस्टों का शासन आया, वहां-वहां मजदूरों ने इस सिद्धांत का विरोध किया है। रूस में भी हड़तालें होती रही हैं, पिछले साल भी हुई। हम जानते हैं कि किस तरह, १९५३ में पूर्वी जर्मनी में, १९५६ में हंगरी में, १९६८ में चेकोस्लोवाकिया में, वहां के मजदूरों ने राजनैतिक यूनियनइज्म का विरोध करते हुए कम्युनिस्ट सरकार के विरोध में बगावत की थी, यह इतिहास हमारे सामने है। अभी-अभी डेढ़ साल पहले, दूसरा एक कम्युनिस्ट शासित देश पोलैंड, वहां के मजदूरों ने कम्युनिस्ट शासन के खिलाफ विद्रोह किया है और विद्रोह करते समय उनकी सर्वप्रथम मांग यह थी कि हमें स्वतन्त्र गैर राजनैतिक मजदूर संघ बनाने का अधिकार होना चाहिये। वहां इस लड़ाई में सारे मजदूर एक हैं। वहां तानाशाही है तो भी इस संघर्ष में, मजदूरों

की विजय हुई, सरकार को हार हुई और पोलैंड के अन्दर मजदूर इतना प्रभावी हो चुका है कि आज आपने अखबार में यह पढ़ा होगा कि वे लोग अपनी मांगों को लेकर जब खड़े हुए तो सरकार को वहां मार्शल-ला लाना पड़ा । याने बहुत बड़ा ताकत वहां खड़ी हुई है । इतनी सख्ती करने पर भी कम्युनिस्टों की नहीं चल रही है । वहां भी स्वतन्त्र ट्रेड यूनियन के आधार पर मजदूरों ने इतनी बड़ी ताकत खड़ी की है इसलिए भारतीय मजदूर संघ का सिद्धांत बिशुद्ध, गैर राजनीतिक ट्रेड यूनियनइज्म किस तरह से मजदूरों का प्रबल बना सकता है यह बात हमारे ख्याल में आ सकती है । दुर्भाग्य से, हमारे यहाँ राजनैतिक यूनियनइज्म चल रहा है, मजदूर बँट गया है, संघर्ष की उसकी ताकत कम हो गयी है और इसके कारण उन पर हमला करने मे सरकार को संकोच नहीं होता ।

राष्ट्र-हित की चौखट में मजदूर-हित--यह ध्येय

आज की जो परिस्थिति आयी इसमें यह तो आनन्द की बात है कि यह इतना भीषण संकट है यह समझकर कर आज हिन्दुस्तान की सभी ट्रेड यूनियनें केवल इंटक को छोड़कर, एक मंच पर आ गई हैं। नेशनल कम्पेन कमेटी के नाम से उन्होंने एक संयुक्त मोर्चा बनाया है। उस सयुक्त मोर्चा के तत्वाधान में देश में जगह-जगह तरह-तरह कार्यक्रम हुए। पिछले २३ नवम्बर को दिल्ली में मजदूरों का एक विशाल प्रदर्शन पार्लियामेंट के सामने हुआ जिसमें १५ लाख मजदूरों ने हिस्सा लिया था । और आने वाली १९ जनवरी को अपना निषेध प्रकट करने के लिए, हिन्दुस्तान के सभी मजदूर एक दिन सांकेतिक हड़ताल पर जाने वाले हैं । यह एकता का दृश्य निर्माण हुआ, यह तो आनन्द की बात है । किन्तु इसी अवसर पर अन्य ट्रेड यूनियन के नेताओं व कार्यकर्त्ताओं कोमैं यह प्रार्थना करना चाहता हूं कि आपको यह सोचना चाहिये कि वास्तव में यदि हम एकता चाहते हैं तो राजनैतिक यूनियनइज्म को छोड़कर जनरल ट्रेड यूनियन कहना उचित होगा या नहीं होगा, इस बारे में पुनः विचार करना चाहिये और यदि पुनः विचार करते हुए सभी केन्द्रीय मजदूर संगठन यह निश्चय करते हैं, कि वे राजनैतिक यूनियनइज्म का छोड़ देंगे, किसी राजनैतिक दल के निमित्त काम नहीं करेंगे, केवल मजदूरों का ही हित, राष्ट्र हित के चौखट के अन्तर्गत मजदूरों का हित, यह एक ही ध्येय रखते हुए काम करेंगे, ऐसा यदि पांचों संगठन निश्चय करते हैं, तो मैं यहां घोषणा करना चाहता हूं कि उस अवस्था में, सबसे प्रथम भारतीय मजदूर संघ स्वयं अपने को समाप्त करने के लिए तत्पर है । क्योंकि हम संस्थागत हित को लेकर कार्य नहीं कर रहे । राष्ट्र और मजदूरों के हित के लिए हमारा काम है और इस दृष्टि से हम विसर्जित होने के लिए तत्पर रहेंगे यह आश्वासन मैं इस समय दे सकता हूं ।

आर्थिक क्षेत्र की सभी घटनाओं के पीछे सूत्र एक

लेकिन यह देखना चाहिए कि इसी समय यह हमला क्यों ? जैसे मैंने पहले कहा कि पिछले दो साल में कोई अभूतपूर्व घटना नहीं हुई जिसके कारण इसकी आवश्यकता थी । फिर भी यह हमला क्यों हुआ ? यह देखने की आवश्यकता है । वैसे तो हमारे देश में दुर्भाग्य से जनता को प्रशिक्षित करने की

प्रक्रिया ही बन्द है। जब कोई एकाध घटना हो जाती है तो उसके ऊपर नेताओं के वक्तव्य आ जाते हैं। मूल में क्या है, यह खोजने की कोशिश नहीं होती। आर्थिक क्षेत्र में तरह-तरह की घटनायें होती हैं। एक घटना हो गई एक वक्तव्य आ गया। उदाहरण के लिए हिन्दुस्तान में पिछले साल ३६·९ लाख टन गेहूं का उत्पादन हुआ, तो भी अमेरिका से १५ लाख टन गेहूं क्यों मँगाया गया एक अलग घटना समझकर १०-५ नेताओं ने वक्तव्य दे दिये। सारी दुनिया में पेट्रो प्रोडक्टस की कीमत जब गिरती जा रही थी उसी समय हिन्दुस्तान में पेट्रो प्रोडक्टस की कीमत बढ़ाई गई जिसमें मिट्टी का तेल, जो गरीब आदमी का है—वह भी शामिल है। एक केवल वक्तव्य आ गया, कि यह नहीं बढ़ाना चाहिए था, १०-५ नेताओं ने वक्तव्य दे दिये, वास्तव में जितनी घटनायें आर्थिक क्षेत्र की हैं, यह देखने में अलग-अलग दीखती होंगी लेकिन इन सबके पीछे एक सूत्र है। जैसे किसी को बार-बार फोड़ा-फुन्सी होती है, एक जगह फोड़े की मलहम पट्टी की वह अच्छा नहीं होता, दूसरी जगह फिर फोड़ा होता है तो मूल में जाने की, आवश्यकता है कि कहीं खून की खराबी तो नहीं है। अगर खून की खराबी है तो खून कैसे ठीक किया जा सकता है इसको दवा देने की आवश्यकता है केवल मरहम पट्टी से काम निकलने वाला नहीं। वैसे ही जो अलग-अलग घटनायें दिखाई देती हैं, उस सबके पीछे कोई सूत्र है यह देखने की आवश्यकता है। वरना हम एक-एक घटना का विरोध करते रहेंगे, इसका कोई अन्त नहीं होगा।

दो परिस्थितियां

जब हम ऐसा देखते हैं तो दिखेगा कि दो परिस्थितियों के संयोग के कारण आज की आर्थिक दुरावस्था निर्माण हुई है। यह दो परिस्थितियां क्या हैं? एक बाह्य परिस्थिति है, एक अन्तर्गत परिस्थिति है।

साम्राज्यवादी देशों के मसूबे

बाह्य परिस्थिति क्या है? १९४७ में हमें स्वातंत्र्य मिला किन्तु केवल अकेले हिन्दुस्तान को ही स्वातंत्र्य मिला ऐसी बात नहीं। दूसरे महायुद्ध के पश्चात् अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति के दबाव के कारण उस समय के सफेद साम्राज्यवादी देशों को बाध्य होकर अपने-अपने उपनिवेशों को स्वतंत्रता देनी पड़ी, लेकिन यह जो सारे सफेद साम्राज्यवादी देश थे, उनका अपने-अपने देश का आर्थिक ढांचा स्वावलम्बी नहीं था। वे देश बहुत समृद्ध हैं ऐसा किसी का ख्याल ही है वास्तव में उनकी समृद्धि का आधार उपनिवेशों का शोषण था। जैसे हिन्दुस्तान से सस्ता कच्चा माल इंगलैंड ले जाना, वहां पक्का माल निर्माण कर हिन्दुस्तान में निर्मित माल ज्यादा रेट में बेचना। हिन्दुस्तान उनकी कॉलोनी होने के कारण रेडो मार्केट के रूप में उनके लिए उपलब्ध था। जैसे इंगलैंड हमारा शोषण करता था वैसे ही सफेद साम्राज्यवादी देश अपने कालोनियों का आर्थिक शोषण कर रहे थे। अब परिस्थिति के दबाव के कारण स्वतन्त्रता तो देनी पड़ी लेकिन उनका आर्थिक ढांचा तो परावलम्बी था। अब अगर यह आर्थिक शोषण अन्य देशों का बन्द हो जाता है तो उनका आर्थिक ढांचा टूट जायगा ऐसी परिस्थिति है, इसके कारण वे इस फिकर में हैं कि किस तरह से आज की स्थिति में भी अपना आर्थिक साम्राज्य, इन सभी नवस्वतन्त्र, अर्ध-

विकसित देशों में फैलाया जाये, इस चिन्ता में यह सारे देश हैं।

श्वेत राष्ट्रों द्वारा आर्थिक साम्राज्य-निर्माण के प्रयास

आज जिस तरह से दुनिया का प्रचलित नक्शा है, उसमें इत्तिफाक से जितने विकसित पुराने साम्राज्यवादी देश हैं यह सभी उत्तर में आ गये हैं और यह जो नवस्वतन्त्र अविकसित देश हैं, वे सारे दक्षिण में आते हैं। इसके कारण आज नई परिभाषा चल पड़ी है, उत्तरी देश व दक्षिणी देश। यह सारे उत्तरी देश इस चिन्ता में हैं कि दक्षिणी देशों का आर्थिक शोषण करते हुए अपने आर्थिक साम्राज्य का गढ़ किस तरह निर्माण किया जाए। इस चक्कर में ये सारे देश हैं किन्तु रूस को जो सुविधा उपलब्ध है, वह सुविधा इन देशों को उपलब्ध नहीं है। रूस का भी आर्थिक ढांचा व समृद्धि स्वावलम्बी नहीं है लेकिन रूस को जिनका आर्थिक शोषण करना है वे सभी छोटे-छोटे पूर्व योरुपीय देश, पूर्व जर्मनी, बलगारिया रूमानिया, चेकोस्लोवाकिया, पोलेंड आदि सारे रूस के बगल में हैं। देश छोटे हैं अतः प्रतिकार नहीं कर सकते क्योंकि रूसी टैंक की छाया में हैं। कभी भी गड़बड़ करेंगे तो रूसी सेना खटाक से घुस सकती है इसके कारण उनकी हिम्मत नहीं हो सकती। इस तरह बगल में ही छोटे-छोटे देशों का शोषण करने की जो सुविधा रूस को है, वह इन सफेद साम्राज्यवादी देशों को नहीं है इसके कारण नवस्वतन्त्र अविकसित देशों में, अपना आर्थिक साम्राज्य निर्माण करने की दृष्टि से उनको तरह-तरह के प्रयास करने पड़ते हैं। इसके लिए उनको आवश्यक हो जाता है कि इन सभी देशों में ऐसी सरकारें स्थापित होनी चाहिए जो सरकारें अपनी जनता का शोषण करने की खुली छूट, साम्राज्यवादी देशों को दे दें। इस तरह की जनता विरोधी सरकारें इन सब नवस्वतंत्र देशों में स्थापित कराना उनको आवश्यक है। अगर सरकारें राष्ट्रभक्त होंगी और सोचेंगी कि हम अपने देश में किसी का आर्थिक साम्राज्य नहीं आने देंगे तो उन देशों का आर्थिक ढांचा टूट जायगा, वह गरीब हो जायेंगे ऐसी आज की हालत है। इस दृष्टि से आर्थिक साम्राज्य के अड्डे, सभी नवस्वतन्त्र देशों में स्थापित करने के लिए, जनता विरोधी एवं राष्ट्रीयता विरोधी सरकारें सभी नवस्वतन्त्र देशों में लाने का प्रयास उन साम्राज्यवादी देशों का है, वह उनकी आवश्यकता है यह एक बाह्य परिस्थिति है।

आज का राजनैतिक ढांचा देश के उपयुक्त नहीं

अब अन्तर्गत परिस्थिति क्या है? हम जानते हैं कि हमारे देश में एक राजनैतिक ढांचा है एक संविधान है। इस संविधान के विषय में प्रारम्भ से ही कहा गया था, कि यह इस भूमि की उपज नहीं है, पश्चिम से वैसे के वैसे उठाकर यहां लाया गया है अतः यह इस देश के लिए उपयुक्त नहीं होगा, यह बात राष्ट्रभक्त विचारकों ने प्रारम्भ से कही थी। पूज्य महात्मा जी ने १९१५-१६ में एक छोटी-सी किताब लिखी 'हिन्द स्वराज्य' उसमें उन्होंने स्पष्ट कहा था कि हमारे देश में ब्रिटिश पार्लियामेन्ट्री सिस्टम ठीक नहीं चलेगी और अगर हम जबरदस्ती थोप देते हैं तो उसके घोर दुष्परिणाम होंगे। लोगों की हालत कैसी होगी उनके शब्द थे, 'एक वेश्या के समान जिसको खरीदा और बेचा जा सकता है।" ऐसी लोगों की अवस्था हो

जायेंगी। ऐसा उन्होंने लिखा था। पिछले ४ साल का इतिहास देखें तो गांधी जो ने कितनी दूरदर्शिता की बात कही इसका हमें अंदाजा आ सकता है। लेनिन के साथ जिन्होंने काम किया, लेकिन बाद में स्वतन्त्र विचारक होने के कारण जो कम्यूनिज्म के ऊपर उठकर अपने देश का विचार करने लगे ऐसे एम० एन० राय ने कहा कि इस प्रकार की सिस्टिम हमारे देश के लिए उपयुक्त नहीं होगी। बाबू जयप्रकाश नारायण और विनोबा जो ने स्पष्ट रूप से कहा कि यहां डेमोक्रेसी अच्छी हो सकती है पालिटिकल पार्टी का सिस्टिम यहां ठीक नहीं चल सकेगा। योगी अरविन्द ने स्पष्ट रूप से कहा और काफी पहले कहा कि पोलीटिकल पार्टी सिस्टिम वह हिन्दुस्तान के लिए विदेशी पद्धति है, वह यहां उपयुक्त नहीं हो सकती। परमपूजनीय श्री गुरुजी ने कहा कि आज की जो पद्धति है वह पद्धति उपयुक्त नहीं, इसमें परिवर्तन लाना चाहिए, फकशनल रिप्रेजेन्टेशन (व्यावसायिक प्रतिनिधित्व) लाना चाहिये। ऐसे तरह-तरह के सुझाव उन्होंने दिये। यानि जो विचारक राष्ट्रभक्त हैं उन्होंने पहले ही कहा था कि यह सिस्टिम हमारे देश के लिए घातक है।

कारण स्पष्ट है—आप देखिये कि यह देश कितना गरीब है। ६० प्रतिशत लोग दलित रेखा के नीचे हैं और ४२ करोड़ लोग निरक्षर हैं, १२ करोड़ लोग केवल हस्ताक्षर कर सकते हैं, वह लिखना-पढ़ना नहीं जानते। जिस देश में गरीबी व निरक्षरता इतनी भीषण हो उस देश में आज की पद्धति में, जो सरकार बनाना चाहता है, उसके लिए आवश्यक है कि अपने एम० पी० व एम० एल० ए० को ज्यादा संख्या में चुन कर ले आये और एम० पी० व एम० एल० ए० को जहां गरीबी व निरक्षरता इतनी भीषण है ज्यादा संख्या में अगर चुनकर लाना है तो आवश्यक हो जाता है कि भ्रष्टाचार लाया जाये, पैसा बहाया जाए, तभी आज की स्थिति में ज्यादा लोगों को चुनकर लाना सम्भव हो सकता है।

ध्येयवादी राजनीति के लिए धैर्य चाहिये

एक व्यक्ति ने राजनीति की यह परिभाषा की। उन्होंने हालांकि मजाक में ही कहा किन्तु बात सत्य है। उन्होंने कहा कि राजनीति एक सौम्य कला है—गरीब जनता से वोट प्राप्त करने की, इलेक्शन का धन श्रीमान् लोगों से लेकर दोनों को बताने की कि हम एक से दूसरे का संरक्षण करेंगे। गरीबों से वोट और अमीरों से नोट प्राप्त करना—यह सौम्य कला यानी राजनीति है। यह बात आज बिल्कुल सही है और इसके कारण यदि हमारे देश में ऐसा कोई ध्येयवादी राजनीतिक दल हो जो सोचेगा कि हम भ्रष्टाचार नहीं करेंगे, राष्ट्रीय चेतना का स्तर, सार्वजनिक शिक्षा का स्तर लगातार ऊँचा उठाने की कोशिश करेंगे, देश लम्बा-चौड़ा होने के कारण जनता विशाल होने के कारण सम्पूर्ण जनता में राष्ट्रीय चेतना का व शिक्षा का स्तर ऊँचा करने में, हो सकता है कि हमें २५-३० साल लगें तो भी चलेगा किन्तु हम साधन शुचिता छोड़ने वाले नहीं-शिक्षा का स्तर ऊँचा हो जायेगा, इस तरह की राष्ट्रीय चेतनायुक्त जनता हमें सत्ता में लायगी तब तक हम निरपेक्ष बुद्धि से काम करते रहेंगे, चाहे २५ साल लगें चाहे ३० साल लगें, इस तरह का धीरज

संवर्धन नहीं हो सकता और इसलिए, उन लोगों को जो आश्वासन दिये हैं उन आश्वासनों की पूर्ति करने के लिए, गरीब जनता पर हमला करने की पूरी तैयारी सरकार कर चुकी है। उसी का प्रतीक परिचायक यह बात है कि हड़ताल का अधिकार छीन लेने वाला कानून सरकार ने लाया है।

मजदूर संघ एक राष्ट्रभक्त संगठन

भारतीय मजदूर संघ, एक राष्ट्रभक्त संगठन है, हम यह नहीं चाहते कि उत्पादन में बाधा आये किन्तु औद्योगिक शांति. इसकी जिम्मेवारी सिर्फ मजदूर की नहीं हो सकती अपने-अपने स्वार्थ के लिए, मालिक, मैनेजमेंट सरकार, सरकार के अफसर, यह यदि गैर जिम्मेवारी का व्यवहार करते हैं, मजदूरों की न्याय्य मांगे मानने से इन्कार करते हैं? तो फिर जायज मांगे मनवाने के लिए, अन्तिम शस्त्र के रूप में, हड़ताल करने का अधिकार मजदूर को होना ही चाहिए, यह नीति भारतीय मजदूर सघ की है। जैसे काम करने के अधिकार को मौलिक अधिकारों की सूची में डाला जाना चाहिए वैसे ही हड़ताल करने के अधिकार को भी, मौलिक अधिकारों की सूची में डाला जाना चाहिए। यह प्रारम्भ से हम लोगों ने कहा है। हाँ राष्ट्रभक्ति के कारण हम यह चाहते हैं. कि हड़ताल का लोकतांत्रिक अधिकार, यह छीन लेने का सरकार को अधिकार नहीं लेकिन ऐसी कानूनी मशीनरी बनानी चाहिए, जिसके कारण मजदूरों में यह विश्वास निर्माण हो कि, हड़ताल पर जाने की आवश्यकता नहीं होगी हमारी उचित बातें इस मशीनरी के कारण पूरी हो सकती है। किस तरह की मशीनरी बन सकती है इसके ठोस सुझाव भारतीय मजदूर संघ ने समय-समय पर दिए हैं।

हड़ताल का अधिकार छीनना लोकतन्त्र विरोधी

हड़ताल का लोकतांत्रिक अधिकार मजदूरों का छीन लेना यह मजदूर विरोधी व लोकतंत्र विरोधी बात है। इस बात को भारतीय मजदुर संघ बर्दाश्त नहीं कर सकता। यह जो हमला हुआ है इसका प्रमुख कारण, विदेशी सरमायादार, कुछ विदेशी सरकारें, हमारे मोनोपली सरमायादार, भारत सरकार व इनका गरीब विरोधी और जनतंत्रीय विरोधी साँझा मोर्चा बनना है। यह संयुक्त मोर्चा बना है उसके कारण यह हमला हो रहा है। क्योंकि वे जानते हैं कि जब गरीबों का शोषण शुरू होगा, देश के चारों ओर फैला हुआ गांवों का कारीगर असंगठित है, क्या खेतीहर मजदूर, क्या गांव में फैले हुए बेरोजगार और अर्ध बेरोजगार बेचारे असंगठित हैं, प्रतिकार नहीं कर सकते प्रतिकार तो यह शहर का औद्योगिक मजदूर करेगा, इसकी कमर यदि तोड़ दी जाती है, तो बाकी लोगों का शोषण हम आराम से कर सकते हैं, कोई आवाज नहीं उठायेगा यह समझकर संगठित मजदूरों पर यह हमला हुआ है।

तानाशाही कायम करने की नई रणनीति

यह हमला, सिर्फ संगठित मजदूरों पर है ऐसा अगर किसी का ख्याल होगा तो वह गलत बात है। यह जो संयुक्त मोर्चा है; सरमायादारों व सरकार का, इसका आगे चलकर क्या मतलब होता है यह भी देखना चाहिए। जून १९७५ में तानाशाही लाने का

प्रयास हुआ, क्यों हुआ ? कारण स्पष्ट हैं। गरीब विरोधी नीतियों को लेकर यदि सरकार चलती है, सरकार के पास प्रोपेगण्डा मशीनरी अच्छी होगी, लेकिन ज्यादा देर तक जनता को गुमराह नहीं किया जा सकता। गरीब लोग नेताओं का सच्चा स्वरूप समझ जायेंगे और यदि उस अवस्था में लोकतन्त्र कायम रहता है और चुनाव होते हैं, तो आज के सरकारी दल को फिर से चुनकर लाना असंभव हो जायगा। और इस दृष्टि से यह सोचा गया कि लोकतन्त्र को समाप्त करते हुए तानाशाही लाना चाहिए। ताकि अपने व्यक्तिगत पारिवारिक स्वार्थ सिद्ध होते रह सकें, चुनाव का झंझट नहीं, तानाशाही कायम हो जायगी। विदेशी व देशी सरमायादारों का लाभ बनता रहेगा और भारत सरकार की अपनी कुर्सी बनी रहेगी। ७५ में यह विचार था और आज भी यह विचार है। लेकिन जून १९७५ में, जो गलतियां की थीं, उनको न दोहराने का विचार सरकार ने किया है। उस समय की सबसे बड़ी गलती यह थी कि एकदम आपात्काल लाया गया इसके कारण एकट्ठे एक ही समय सबको दुश्मन बनाया गया और इसके दुष्परिणाम १९ महीने के बाद उनको भुगतने पड़े। इस गलती को दोबारा न दुहराने का विचार सरकार ने किया है। यह नई रणनीति सरकार ने ली है।

यह रणनीति है, एक-एक को पकड़ कर उसकी पिटाई करना और बाकी जनता को समझाना कि यह बदमाश थे, गड़बड़ कर रहे थे इसलिए इनकी पिटाई हो रही है आपसे हमारी दोस्ती है आपके खिलाफ कुछ नहीं है। ऐसा बाकी लोगों को शांत रखना। एक की पिटाई हो जाएगी, फिर दूसरे को पिटाई के लिए पकड़ना—इस तरह एक-एक को पकड़ कर पिटाई करना यह नई रणनीति सरकार ने अपनाई है और इसमें पहला नम्बर संगठित मजदूरों का आया हुआ है।

दूसरी बारी प्रेस की

यह आखरी नम्बर नहीं है, मजदूर यदि इस लड़ाई में हार जाते हैं। मजदूर-आंदोलन की कमर अगर टूट जाती है तो दूसरा नम्बर प्रेस का आने वाला है, यह बात मैं विश्वासपूर्वक कहना चाहता हूं। आगे नम्बर आने वाला है इतनी ही बात नहीं आज समाचार पत्रों में प्रकाशित नहीं होता, किन्तु मैं जानता हूं कि जो बड़े राष्ट्रीय वृत्त पत्र हैं, जिनका सरकुलेशन बहुत बड़ा है, आर्थिक स्थिति अच्छी है। इसके कारण सरकार के खिलाफ टीका-टिप्पणी करने का साहस जो रख सकते हैं ऐसे बड़े राष्ट्रीय वृत्त पत्रों के अन्तर्गत कारोबार में हस्तक्षेप करते हुए गड़बड़ निर्माण करने का प्रयास आज भी अप्रत्यक्ष अपने एजेण्टों के द्वारा सरकार ने किया हुआ है। और मैं यह विश्वासपूर्वक कह सकता हूं कि जब मजदूर आंदोलन की कमर टूट जायगी, दूसरा नम्बर वृत्त पत्रों का आयगा और वह खतम हो जायगा।

तीसरा प्रहार अन्य लोकतांत्रिक शक्तियों पर होगा

तीसरा नम्बर सभी प्रकार की लोकतांत्रिक शक्तियों का आयगा, इस तरह एक-एक कर पकड़ कर पिटाई करना, यह नई रणनीति सरकार ने तय की है। माने इस लड़ाई में मजदूरों को पिटाई हो रही है, लोकतन्त्र की समर्थक शक्तियां यदि जागरूक नहीं रही इस लड़ाई का सच्चा स्वरूप

उन्होंने नहीं समझ लिया और मजदूरों की यदि हार हो जाती है तो लोकतान्त्रिक शक्तियो को बहुत बड़ी चोट पहुँचने वाली है किन्तु इस लड़ाई में मजदूरों की विजय होती है तो तानाशाही लाने वाली शक्तियों को बड़ी चोट पहुँचने वाली है। माने यह लड़ाई यद्यपि बाहर से दीखने के लिए केवल मजदूरों की अपने अधिकारों की लड़ाई होगी वास्तव में यह एक शृंखला की कड़ी है।

सरकार द्वारा मजदूरों पर आक्रमण तानाशाही-शृंखला की एक कड़ी

सरकार का यह आक्रमण, यह अकेली घटना नहीं—एक शृंखला की पहली कड़ी है और इसमें यदि मजदूर हार जाता है, तो स्वतत्रता को धक्का लगेगा। यह मजदूर के हड़ताल के अधिकार की लड़ाई नहीं तो लोकतन्त्र को बचाने की लड़ाई है यह बात सभी लोकतांत्रिक शक्तियों को समझना चाहिए। हमारे इधर एक कहावत है कि महिलायें सुबह के समय अनाज के दाने पीसने के लिए बैठती है तो कुछ अनाज के दाने चक्की में चले जाते हैं और कुछ अनाज के दाने बाहर किसी महिला के हाथ सूप में आनन्द से नाचते रहते हैं। यह जो सूप में आनन्द से नाचने वाले दाने हैं यह चक्की में जो दान गये हैं उनकी ओर देखते हैं और कहते हैं, इनकी अच्छी पिसाई हो रही है होने दो, लेकिन वे नहीं जानते कि दस मिनट बाद उनका भी नम्बर आने वाला है, उनको भी चक्की में डाला जायेगा उनकी वैसे ही पिसाई होगी जैसे आज इनकी हो रही है।

केवल श्रमिकों की नहीं यह तो 'लोकतन्त्र बचाओ' की लड़ाई हैं

सरकार के प्रोपेगेंडा के कारण लोक-तन्त्र के समर्थक लोग भी ऐसा मान रहे हैं कि यह तो मजदूरों की लड़ाई है हमें इसमें लेना-देना क्या हैं? किन्तु वे नहीं जानते कि यदि इसमें मजदूरों की पिसाई पूरी तरह से हो गई, तो अगला नम्बर तुम्हारा भी आने वाला है—लोकतन्त्र के समर्थक लोग इस बात को अभी जानते नहीं हैं। यदि उन्होंने यह जागरुकता नही रखी और इस लड़ाई मे मजदूर आंदोलन का पूरा समर्थन नही किया मजदूर हार जायेगा इतनी ही बात नहीं तो लोकतन्त्र को समाप्त करने के प्रयास में, तानाशाही लाने के प्रयास में भारत सरकार को बहुत बड़ा समर्थन व शक्ति प्राप्त होगी। वह बात सोच समझकर सभी लोकतन्त्र के समर्थकों को ध्यान में रखना चाहिए और यह लड़ाई केवल मजदूरों के अधिकार की लड़ाई नहीं, यह लोकतन्त्र का बचाओ की लड़ाई है, यह समझकर इस लड़ाई में मजदूरों का पूरी ताकत से समर्थन करना चाहिए।

संकट परम्परा का मूल कारण—स्वाभिमान शून्यता

वैसे ही इस संकट परम्परा का मूल कारण क्या है इसका विचार सभी राष्ट्र भक्त लोगों को करने की आवश्यकता है। मैं केवल मजदूर क्षेत्र तक सीमित बात नहीं कर रहा। आज चारों ओर एक निराशा का वायुमण्डल है। सभी देशभक्त सोच रहे हैं कि क्या होगा? ३४ साल तक हम कुछ बना नहीं पाए हमारी तो एक के बाद एक अधोगति होती जा रही है, मालूम होता है कि हमारे अन्दर वह क्षमतायें नहीं है जिनके आधार पर देश को ऊपर लाया जा सकता है। इस तरह आत्मग्लानि का विचार देश भक्त लोगों के मन में निर्माण हो रहा है। हम

देखते हैं कि दूसरा महायुद्ध, जर्मनी व जापान की भूमि पर लड़ा गया था इसके कारण वे देश उद्ध्वस्त हो गए थे, लेकिन इतने थोड़े समय में दोनों ने अपने राष्ट्र का इतना निर्माण किया कि आज जर्मनी की दहशत सारे योरुप पर है और आर्थिक दृष्टि से जापान का येन अमेरिका के डालर को धक्का दे रहा है— इतनी प्रगति दोनों देशों ने की। हमारे देश में तो महायुद्ध लड़ा नहीं गया था, तो भी हम नीचे जा रहे हैं। लोगों के मन में यह भ्रम है, कि हम नीचे जा रहे हैं इसका कारण, ऊपर उठने की हमारी क्षमता नहीं और इसलिए अब आशा के लिए कोई गुंजाइश नहीं, इस प्रकार का विचार सर्व-साधारण नागरिक के मन में आ रहा है। बात बिल्कुल गलत है। हमारे देश में वह सारी क्षमतायें हैं जिसके आधार पर किसी भी राष्ट्र को दुनिया का एक महान राष्ट्र बनाया जा सकता है। हमारे पास साधनों की शक्ति है, हमारे पास मनुष्य बल है, हमारे पास, वह गुणवत्ता है जिसके कारण आज पश्चिमी देश प्रगति कर रहे हैं। अमेरिका का 'नासा' जहां आकाशीय विज्ञान की प्रयोगशाला है वहां अगर आप जायेंगे तो अमेरिकन व जर्मन वैज्ञानिक व टेकनॉलॉजिस्ट के कंधे से कंधा लगाकर हमारे भारतीय वैज्ञानिक और टेकनॉलॉजिस्ट काम कर रहे हैं और वहां उनको समान इज्जत दी जाती है यह आपको दिखाई देगा। हम विज्ञान में, टेकनॉलॉजी में, गुणवत्ता में कम नहीं। ऊपर आने के लिए वह सारा मसाला हमारे पास तैयार है। फिर हम नीचे क्यों जा रहे हैं। इसका एक ही कारण है। शासन चलाने वाले नेताओं में राष्ट्रीय स्वाभिमान नहीं।

अपने पैरों पर खड़े होने की आवश्यकता

हम अपने राष्ट्र को अपने पैरों पर खड़ा करेंगे, बड़ा करेंगे, यह आकांक्षा नहीं, केवल व्यक्तिगत और पारिवारिक स्वार्थ के लिए सत्ता का उपयोग करने की सीमित इच्छा है, राष्ट्र को बड़ा बनाने की इच्छा नहीं है। इसके कारण आप जानते हैं हमारे देश में जो योजनायें चल रही हैं वह भारतीयों द्वारा चलाई हुई योजनायें नहीं हैं। ऐसा दीखता होगा कि प्लानिंग कमीशन के सभी सदस्य भारतीय हैं, लेकिन उनका मार्गदर्शन व निर्देशन सारा विदेशी विशेषज्ञ कर रहे हैं और विदेशी विशेषज्ञ अपने अपने देशों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर हमारे देश की योजनायें बना रहे हैं। सारे हिन्दुस्तान का प्लानिंग विदेशों को सुविधा को ध्यान में रखकर हो रहा है, यह बात चारों ओर दिखाई दे रही है, हम अपने बल पर खड़े हो जायें, वैसी आज की स्थिति नहीं है।

चीन स्वावलम्बी कैसे बना ?

हमारे नजदीक चीन है उसका उदाहरण हम लेंगे। चीन के माओ जितने कम्युनिस्ट थे उतने अधिक राष्ट्र भक्त भी थे। उन्होंने किस तरह व्यवहार किया, हमारे नेता किस तरह व्यवहार करते हैं, एक छोटा-सा उदाहरण मैं आपको बताना चाहता हूं। आप जानते हैं कि १९४८ में चीन में राज्य क्रांति हुई। कम्युनिस्टों के हाथ में चीन की बागडोर आई, उस समय चीन अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवाद का वायुमण्डल था, सारी दुनियां के कम्युनिस्ट देश एक हैं, यह स्वप्न रंजन चल रहा था। रूसी चीनी भाई-भाई के नारे चल रहे थे और इस कारण जो चीन की प्रथम पंचवार्षिक योजना थी वह पूरी तरह से रूस ने तैयार की हुई थी

योजना बनाने वाले रूसी, योजना के कार्यान्वियन के लिए विशेषज्ञ सारे रूसी थे। प्लान व प्रोजक्ट की सारी मशीनरी भी रूसी थी। उनको लगता था कि अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवाद है, वह आए क्या हम रहे क्या—एक ही बात है, ऐसा स्वप्न रंजन चल रहा था। लेकिन धीरे-धीरे माओ के यह ख्याल में आया कि यह अन्तर्राष्ट्रीयता का नारा धोखा है। रूस अपना आर्थिक साम्राज्य यहां फैलाना चाहता है, आर्थिक शोषण करना चाहता है। यह दादागीरी हम नहीं चलने देंगे। यह राष्ट्रीय स्वाभिमान की भावना, माओ और उनके साथियों में जाग्रत हुई और उन्होंने निश्चिय किया कि रूस को यहाँ से हटाना है। कोल्ड वार शुरू हुई और १९६० में रूस व चीन का सम्बन्ध विच्छेद हो गया। जिस समय सम्बन्ध विच्छेद हुआ उस समय, रूस ने सोचा चीन नया राष्ट्र है इस पर दबाव लाया जा सकता है, दबाव की नीति लाई जा सकती है और इस दृष्टि से जैसे ही सम्बन्ध विच्छेद हुआ वैसे ही उन्होंने तुरन्त दबाव लाने के लिए अपनी सारी पूंजी वापस ले गए अपने सारे विशेषज्ञों को वापस बुला लिया और अपनी सारी मशीनरी वापस ले गए, क्योंकि सारे प्लान व प्रोजेक्ट रूसी मशीनरी के सहारे चल रहे थे अतः वे सोच रहे थे कि इसके कारण माओ दब जायगा, झुक जायगा और हमारी शरण में आ जाएगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ व धीरज के साथ. राष्ट्रभक्ति के साथ खड़े हुए। चीन की जो परम्परागत पद्धतियां व योजनायें थी उसको उन्होंने बढ़ावा दिया, लोग समझ सकें इतना तकनीकी जानकारी देते हुए उन परम्परागत स्कीमों को बढ़ावा दिया। रशियन विशेषज्ञों ने कुछ सिखाया नहीं था तो भी देख-देखकर उनके नीचे काम करने वाले चीनी लोगों को सीखना चाहिए उस प्रक्रिया में से अपने विशेषज्ञों को ट्रायल एण्ड एरर (प्रयास एवं त्रुटि) पद्धति से अपने प्रोजेक्ट्स को चलाने की इजाजत दी। अपने वैज्ञानिकों और अपने तकनीकियों के भरोसे देश का निर्माण करने का प्रयास किया।

एक उदाहरण

आज हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान-शून्य सरकारी नौकर किस तरह काम कर रहे हैं—एक छोटा उदाहरण तुलनात्मक विवेचन के लिए आपके ख्याल में आ जाये इसलिए मैं देना चाहता हूं। अभी कलकत्ता के पास हुगली नदी पर दूसरा पुल बनाने का कार्य चल रहा है। वास्तव में यह पुल बनाने के लिए जिस-जिस कौशल्य की आवश्यकता है वह सारा कौशल्य हमारे देश में है। जो योजना कर सकते, ब्ल्यूप्रिंट बना सकते ऐसे इन्जीनियर व तकनीकी हैं—सभी भारतीय हमारे पास हैं। लेकिन आपको आश्चर्य होगा कि ड्राफ्ट प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार करने से लेकर अब तक हमारे किसी इंजीनियर को उसमें नहीं लिया गया न हमारे विशेषज्ञ की सहायता ली गई। विदेशी विशेषज्ञ, इंजीनियर और तकनीकी आये और उनके नीचे काम करने का कार्य भारतीयों को बताया जा रहा है। इसके तुलना में दूसरा उदाहरण देखिये। १९६० में जब यह दिखाई देने लगा कि अब रूस से सम्बन्ध विच्छेद होगा, उसके १-१॥ साल पहले वहां की एक बड़ी नदी, यांगसो, पर पुल बनाने का कार्य चल रहा था। रूसी मशीनरी थी रूसी विशेषज्ञ थे। थोड़े दिन की बात-चीत के बाद सरकार

लोगों को हम दूसरी जगह भेजना चाहते हैं, वहाँ बड़ा जरूरी काम है आपके बिना हो नहीं सकता। उन्होंने कहा कि हम जायेंगे तो इस पुल का काम अधूरा रहेगा, सरकार ने कहा कि इसे अधूरा रहने दीजिए वहाँ ज्यादा जरूरी काम है। सारी फौज रूसी विशेषज्ञों की वहाँ भेजी गई। कुछ महीनों के बाद उनको दोबारा यहाँ लाया गया उनको आश्चर्य हुआ कि पुल का कार्य पूरा हो गया है। सरकार ने पूछा कि आपके जो स्पेसीफिकेशस थे, उसमें और जो पुल तैयार हुआ है उसमें कितना अन्तर है? उन्होंने खोज कर निकाला केवल १·५ सेंन्टीमीटर का अन्तर था। रूसी विशेषज्ञों ने चीनी विशेषज्ञों को कुछ सिखाया नहीं था, वे केवल अनुभव के आधार पर सीखे, केवल १ ५ सेंटीमीटर का अन्तर था। उसके बाद उनको आश्चर्य को धक्का देने वाली एक घटना हुई। उनको एक दूसरे स्थान पर ले गए। पुल बनाने की जो रूसी मशीनरी थी ऐसे दो सेट वहां रखे गए थे। उनको बताया गया कि इसमें एक सेट आपका है एक सेट हमने तैयार किया है आपका सेट कौन सा है और हमारा सेट कौनसा है यह जरा पहचान लीजिए, वह पहचान नहीं सके। जब यह सारे विशेषज्ञ दूसरी जगह गये थे—बीच की कालावधि में इस मॉडेल की पूरी नकल इतने अच्छे ढंग से उन्होंने की वह पहचान नहीं सके कि इसमें रूसी मशीनरी कौन सी है और चीनी मशीनरी कौन सी है।

यह महान् प्रयास इस तरह का जगह-जगह जो किया इसके कारण उन्होंने अपने राष्ट्र के सामने राष्ट्रीय स्वाभिमान की घोषणा रखी। केवल भाषण में घोषणा नहीं की क्या राष्ट्रीय स्वावलम्बन का कुछ भी मतलब हो सकता है अगर विदेशो से गेहूं लाकर यहां खाया जाए। उन्होंने यह एक लक्ष्य रखा, कि हमारा राष्ट्रीय पुनः उत्थान हमारे ही प्रयासों के आधार पर होगा यह राष्ट्रीय स्वाभिमान की घोषणा उन्होंने की। एक महान् प्रयास करते हुए हम देखते हैं कि चीन में उनका राज्य हमारे बाद आया, जैसे मैंने कहा कि माओ जितना कम्युनिस्ट था उससे अधिक कट्टर वह राष्ट्र भक्त था, राष्ट्रभक्ति के आधार पर महान प्रयास करते हुए आज चीन हमसे आगे निकल गया, यह बात किसी से छिपी हुई नहीं है।

राष्ट्रीय स्वावलम्बन का निश्चय करें

यदि हमने प्रयास किया होता, उसमें हम असफल होते तब तो निराशा की बात थी। इस दिशा में हमने प्रयास ही नहीं किया। हम तो दुनिया को शान्ति देने के लिए निकले और अपने व्यक्तिगत और पारिवारिक स्वार्थ के लिए हिन्दुस्तान की आर्थिक स्वतंत्रता, हिन्दुस्तान का सार्वभौमत्व, विदेशियों को बेचने में कोई शरम नहीं लगी। ऐसी हमारे यहां नेताओ की आज अवस्था है। माने आज यदि हमारी गिरावट है, वह इसके कारण नहीं कि ऊपर उठने की हमारी क्षमता नहीं तो हर तरह की क्षमतायें हमारे देश के अन्दर हैं। हम यदि राष्ट्रीय स्वाभिमान से युक्त होकर, यह निश्चय करेंगे कि हमारा राष्ट्रीय पुनः उत्थान हमारे ही प्रयासों के आधार के ऊपर करेंगे तो मैं यह विश्वास के साथ कह सकता हूं कि इस शताब्दि के अन्त तक हमारा देश दुनिया के प्रथम श्रेणी के देश में जाकर बैठ सकता है। इतनी क्षमता देश के अन्दर है। क्षमताओं का अभाव नहीं तो इच्छाशक्ति

का अभाव है । और इस इच्छाशक्ति के अभाव के कारण राष्ट्रीय स्वाभिमान को भूलकर जहां १९४७ में बड़ी कुर्बानी के बाद हमने राजनैतिक स्वातंत्र्य प्राप्त किया, आज फिर से हमारी स्वतंत्रता व सार्वभौमत्व बेचने के लिए नेता लोग तैयार हो गये हैं । इसी में से आर्थिक संकट परम्परा निर्माण हुई है यह कार्य-कारणभाव ख्याल में रखना चाहिए । विदेशियों की सुविधा के लिए, हमारी गरीब जनता पर और मजदूरों पर कुठाराघात हो रहा है यह कार्य-कारणभाव ध्यान में रखना चाहिए ।

लोकतन्त्र की लड़ाई

यह यदि हम ध्यान में रखते हैं तो यह लड़ाई सरकार-विरोधी मजदूरों की लड़ाई है, यह सिर्फ मजदूरों की लड़ाई है ऐसा समझना गलत होगा । यह राष्ट्रीय स्वाभिमान को बचाने की लड़ाई है और इस दृष्टि से सभी राष्ट्र भक्त लोगों ने इस लड़ाई में मजदूरों का समर्थन करना चाहिए । याने यह लड़ाई केवल संगठित मजदूरों की नहीं तो सम्पूर्ण गरीब जनता की है । केवल गरीब जनता की नहीं आम जनता की है । लोकतंत्र के समर्थकों की यह लड़ाई है । राष्ट्रभक्त शक्तियों की यह लड़ाई है । इस लड़ाई का सच्चा स्वरूप समझते हुए लोकतन्त्र के सभी समर्थक राष्ट्रीय स्वाभिमान की चिन्ता करने वाले राष्ट्रभक्त—सभी लोगों ने इस संघर्ष में मजदूरों का साथ देना चाहिए । यह बात आज जनता को समझाने की आवश्यकता है ।

आज के इस अवसर पर मैं समझता हूं कि बहुत कुछ बोलना उचित ही नहीं होगा, आवश्यक भी नहीं होगा किन्तु मजदूरो के लिए, गरीबों के लिए, लोकतन्त्र के लिए, राष्ट्र के आर्थिक स्वातंत्र्य व सार्वभौमत्व के लिए जो बड़ा खतरा सामने दिखाई पड़ रहा है इसके कारण स्वाभाविक रूप से मन में आने वाली कुछ बातें आपके सामने रखी हैं ।

"WITH BEST COMPLIMENTS FROM"

JAIPUR SYNTEX LIMITED

(Manufacturers of Superior quality
Synthetic blended yarn)

Regd. Office :
B-144A Vijay path,
Tilak nagar,
JAIPUR-302 004
Gram : EVERBRITE
TLX : 036 - 322
Phone : 49200

Bombay Office :
7/11, Chunawaia building,
Kolsa Street, Pydhonie
BOMBAY
Phone : 342669

Mills :
Vill. : Behror,
Distt. Alwar
Rajasthan
Phone : 59, 79
Gram : EVERBRITE

Speech of Shri V. V. John to felicitate Shri Dattopant Thengdi on the occasion of Shashthi-Purti on 20-12-81 at Jodhpur.

Shri Thengdi and Friends,

I have lived in Rajasthan for the greater past of my life. I have lived in a Hindi speaking area and after all these years even now I felicitate to speak even to Hindi knowing public. I have purposely made a speech which is only at the cost of amusement and what I wished to say to day is not merely a matter for amusement but I wish to step on a serious matter. A few hours before the meeting, a friend of mine asked me what credentials I had for presiding over the felicitation and participation in felicitating a leader who has identified himself with a party organisation. I my self am a functionary of the Citizens For Democracy which proclaims its non-partisan politics in the country. In the second instance how could I participate in a function that is arranged in order to felicitate a leader who is identified with a labour organisation which has some party affiliations. I wish to clear to the people the misunderstanding about the organisation which I myself represented. We are non-party but we are non-political. We propose to enconrage and to promote healthy political development in this country. I am aware and therefore in no doubt about the developments of a healthy labour organisation. A good political party must strengthen democracy that we wish to be promoted as broadly abroad. And So I am not apologetic as the acting President of the Citizens for Democracy at the moment I am performing one of the legitimate functions of our

organisation in being present here and felicitating a labour leader on his Shashthi Purti.

I have, however doubts about the kind of role that has again been subscribed to me अध्यक्ष द्वारा आशीर्वचन; that is how it has put down in the programme to speak the words of blessings. I have only one title. I discovered that I am some what older than Mr. Thengdi. I may be one of the oldest persons present here. There were kindly references to my associations with Jodhpur in various capacities. I retired as vice-chancellor in rather interesting circumstances many years ago. As matter of fact, I am a retired person of some standing and if you wish to know that this is the occasion for felicitating Mr. Thengdi you may mind an old talking about himself. I may be named for a moment to talk about myself. I am a retired man of some standing and retired five times. I am so happy to be associated with this celebration on completion of sixty years by a man who has very much better a time. I could even claim for myself that sixty is a wonderful age. Harrold Mackmillan who was the Prime Minister of England I wrote in his biography that he considered the best years of man's life as coming between 55 to 65. And I could certify from my experience that this is true. Inspite of what ever you may know about experiences.

I am therefore particularly happy to be able to tell Mr. Thengdi that he is in the middle of the happiest period of his life. I am absolutely sure that he would like always the affection manifestedly shown to him.

He will achieve all the high objectives that he has proposed to himself as a leader of the people. One must be a leader. There is no group that one should belong to the leader of working people. As I am mostly a leader of non-working people, I trust you know what that means. After having accepted the organisation's invitation to come here and take the precautions of reading some of the writings of Mr. Thengdi. And I think he has expanded on the problem that he is dealing with and it struck me too very much

that I was telling if before the meeting. I proposed to blur with those pronouncements of the stndies no longer. I may continue with the thinking that I expect I would just mention one instance. In talking about economic and social problems in a sort of saying a seeming digression. He wrote that San Francis, Florance Nightingale, Living Stone or Dizens cannot be raised out of voluminous documents of the planning commission or the beautifully worded manifestoes of the political parties. Illustrious examples from our national cultural heritage would be the surest source of inspiration for a social work. Nothing could be more a warning to enthuse in our public life than such an observation and the fact is that we have got inhumanisation of very largely people from other cultural heritage. These people did not come out of Governmental efforts and they do draw their inspiration from burocratic or governmental documents. They expend the culture of the people and we have noble examples of this kind of tradition and it is important for us to recognise that is, out of those cultural roots that here salvation of the nation is to be worked out. I do remind my self that we are not even proud enough of our contemporary achievements. We, all the time envy other people. We are 680 million people. I should like Indians to be proud even of large numbers because every seventh man and woman in this world is an Indian. I ought to be proud of this fact and therefore often people right from Kerala, like talking about the many systems of the north and the east and the west and so on. We should be able to turn to them and say it is a great deal to frighten the 680 million people. If we put it in other ways. In 1976 amenesty international made a reckoning about the absence at present of freedom among the people of the world and they discovered that only 15% live in the conditions of freedom All the other lived in the conditions of maximum despotism and stateism. And then in 1977 one night by the kind of decision that the people of this country made in March 1977 which doubled that percentage i c. from 15% to 30% of the population of the world.

The point I am making is that we are not sufficiently proud of this fact. In 1947 we became a free people. In the wake of our independence Country after country emerged independent both in Asia and in Africa Country after country after words succumbed to one type of absolute rule or another. We alone have survived. We are a free people and on the main in Asia only our democracy is surviving. We ought to feel some thing about it but we are not proud enough of the facts. And I will swifly move to several felicitating factes of Mr. Thengdi's writings the very invigorating genius of the country and the tradition and we shall be able to draw inspiration from those sources. And therefore as a labour leader my acquitance with the labour leader is very scanty but even so could testify that he is a genius

I am very very happy having been given the opportunity of being associated with felicit ting him on his 60th year the "Shashtipurti". I am sure that he has only just started. There is a great peom by Robert Browing In his peom the lines occur "The best is yet to be" when a person is felicitated when he is sixty years old or seventy year old. There is a point in doing that in a country like India if you have survived upto sixty. This is no mean achievement but that is not quite enough and there is some danger, though the danger is not very present at Mr. Thangdi sta.e. There is a danger in these felicitations that there is more ficitious of all congratulations. Good wishers might imagine now my work is finished, it is consecrated. I have done sixty years of work and then sit back and relax or retire. And that is all. I have qnoted a poet and wish to say that the best is yet to be And most fruit ful years of Mr. Thengdi's life I anticipate, will be the coming decade. I wish him all success aud God bless him.

JAIPUR METALS AND ELECTRICALS LIMITED

NEAR RAILWAY STATION, JAIPUR–6.

Quality Manufacturers And Exporters of :—

(A) 'JAIPUR' Single Phase House Service Electricity Meters.

(B) Three phase Electricity Meters.

(C) COPPER PRODUCTS :

Hot Rolled Copper Rods For Redrawing

Hard Drawn Bare Copper Wires

Bright Annealed Copper Wires

Centre Copper Wire

Grooved Copper Wire

Stranded Copper Conductors

Hard Drawn Bare Copper Strips

Bright Annealed Copper Strips

Bare And Stranded Cadmium Copper Wires

Cadmium Copper Rods

Arsenical Copper Rods

Enamelled Copper Wires And Strips

(D) ALUMINIUM PRODUCTS :

All Aluminium Conductors (AAC)

Aluminium Conductors Steel Reinforced (ACSR)

Cable : Metals **Phone : 74251** **Telex : 036–22**